पराग प्रकाशन, दिल्ली-३२

नया कोतवाल

कुलदीप गुसाईं

मूल्य : पचीस रुपये / प्रथम संस्करण, १९९० / प्रकाशक : पराग प्रकाशन, ३/११४, कर्ण गली, विश्वासनगर, शाहदरा, दिल्ली-११००३२ / मुद्रक : कोणार्क प्रिंटर्स, दिल्ली-११००३२

NAYA KOTWAL : Kuldeep Gosain Rs. 25.00

दो शब्द

मैं अच्छी तरह से समझता हू कि कला और जीवन का अटूट सबध है। उसको दृष्टि मे रखते हुए मैंने अपने नाटक 'नया कोतवाल' मे हिन्दुस्तानी भाषा का प्रयोग किया है। हिन्दुस्तानी से मेरा अभिप्राय हिन्दी, पजाबी, उर्दू, हरियाणवी तथा पूरबी और पश्चिमी भाषाओ से है। भारत मे भिन्न भिन्न प्रकार के लोग रहते है, भिन्न-भिन्न भाषाए बोलते है और इस सब के बावजूद एक है। मैंने यह प्रयत्न किया है कि मेरे नाटक की भाषा बिना किसी कठिनाई के न केवल बुद्धिजीवियो की बल्कि साधारण लोगो की समझ मे भी आ सके। इसीलिए न केवल इस नाटक मे बल्कि अपने दूसरे नाटको की रचना करते समय भी मैंने कला को कभी जीवन से दूर नही रखा।

आज का दर्शक हिन्दुस्तानी नाटको मे कुछ नवीनता चाहता है। वह एक ही प्रकार के नाच गाने और पुरानी घिसी पिटी कहानियो से ऊब गया है। वह ऐसे नाटक चाहता है जो उसके दिल की गहराइयो को छू ले। वह यह भी चाहता है कि आज का नाटककार उसकी दिनभर की थकान को अपनी कला से समाप्त कर दे।

जनता और पुलिस मे भाईचारे का रिश्ता होना चाहिए। जनता को यह कभी नही भूलना चाहिए कि पुलिस विभाग का हर कर्मचारी, चाहे वह किसी भी पद पर क्यो न हो, उन्ही के घरो का व्यक्ति है। उन्ही के परिवारो का सदस्य है। उन्ही मे से एक है। और पुलिस विभाग के हर कर्मचारी को यह नही भूलना चाहिए कि वह 'जनता' मे से ही, जनता के परिवार मे से लिया गया है। फिर यह खाई क्यो ?

—कुलबोध गुसाईं

नया

थाना कूचा घासीराम, जिसके कोतवाल है मुशद्दीलाल। मुशद्दीलाल कई सालो से इस थाने पर अपना सिक्का जमाए बैठे है। वह हर काम पैसे के ज़ोर स करवा देत है। पैसा ही इनका माई-बाप है। कइ बार इनकी बदली हुइ पर रुक गई। कैसे रुकी, क्यो रुकी—यह तो या वह जानत है या ऊपरवाला। इनके पास पैसा कहा से आता है कैसे आता है, यह सभी जानत है। इनका कहना है कि पैसा चाह तो क्या नही कर सकता। पैसा अगर पत्थर पर रख दो तो पत्थर भी पिघल जाएगा। यह कहा तक सच है इसको देखने के लिए कूचा घासीराम म चलत हैं। वहा पहुचने स पहले एक बात बहुत ही आवश्यक है जो आपको ध्यान म रखनी पड़ेगी कि इस कहानी का सबध किसी व्यक्ति विशेष, समुदाय या स्थान से नही है। यह लेखक की अपने मन की कल्पना है जिसके द्वारा वह अपने हृदय के भाव आप तक पहुचाना चाहता है।

पहला दृश्य

कुर्सी और मेज मध्य में रखे हुए हैं। बायीं ओर दायीं तरफ आफिस टेबिल और कुर्सी पड़ी हुई हैं। बायीं टेबिल पर टेलीफोन रखा है। उसके पीछे एक बेंच भी पड़ा है। सामने दोनों तरफ एक-एक दरवाजा है जिन पर चिक लटकी है। बाएं दरवाजे पर एस० एच० ओ० का बोर्ड लगा है और दाएं दरवाजे पर लिखा है—'इन्वेस्टीगेशन रूम'। आई० आर० के साथ ही इलाके के दस-नम्बरियों की फोटो लगी हैं। दोनों दरवाजों के बीच ऊपर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की फोटो लगी है। दायीं ओर एक नेता और उसका चमचा खड़ा है। थोड़ी दूर हटकर इलाके के नामी-गिरामी शरीफ बदमाश का नौकर रामभरोसे सिर झुकाए खड़ा है। बायीं ओर शहर का नामी गुण्डा माइकल खड़ा है। उसके साथ मध्य की कुर्सी के पीछे पीठ मोड़े खड़े हैं इलाके के कोतवाल श्री मुण्डीलाल। इनके साथ ही खड़े हैं इस थाने के दो हवलदार—सरदार हजारासिंह और चौधरी लखमीसिंह, जो कोतवाल की हर बात में—ठीक हो या गलत—हां में हां मिलाते हैं।

लक्खीसिंह और हजारासिंह कहकहा लगाते हुए हाथ मिलाते हैं।

नेता सुनो, इलाके के कोने-कोने मे और गली गली मे माम्प्रदायिक दगे करवा दो। हिन्दुओ को मिक्खो और मुसलमानो को हिन्दुओ और सिक्खो के खिलाफ भडका दो। हिन्दुस्तानियो की सबसे बडी कमजोरी धर्म, ईमान और पथ है। उसको खतरे मे डाल दो। अपने आप फसाद हो जायेंगे और हमारा प्लान कामयाब हो जायेगा।

चमचा सुना है कानून के हाथ बहुत लम्बे हैं, सरकार का क्या होगा।

मुशद्दीलाल सरकार का क्या होना है। घबराते क्या हो मैं जो हू कोतवाल मुशद्दीलाल! कर दूगा कमाल। तुम्हारा और तुम्हारे नेता का नाम कही नहीं आयेगा। निकालो एक लाख रुपया।

नेता (अगूठे दिखाते हुए) डन!

हजारासिंह और लक्खीसिंह दोनो जोर से कह-कहा लगाकर हाथ मिलाते है।

मुशद्दीलाल तुम कैसे आये हो रामभरोसे?

रामभरोसे बाऊजी ने भेजा है, सरकार! शराब की चौथी भट्ठी के बारे मे बात करने के लिए।

मुशद्दीलाल महगाई बहुत बढ गई है। अब एक हजार

रुपये महीने से काम नहीं चलेगा। हर नई भट्ठी से अब दो हजार रुपये महीना लिया जायेगा। वोल दो उनको जाकर।

रामभरोसे . वोलने की क्या जरूरत है सरकार! डन।

लक्खीसिंह और हजारासिंह हंसते है और हाथ मिलाते हैं।

मुशद्दीलाल : कहो माइकल, कैसे आए? खैरियत तो है?

माइकल : पुलिस मेरे पीछे पड़ी है, बॉस! कल रामपुर के चौक पर झगड़ा हो गया। गर्मा-गर्मी में मेरे हाथ से एक आदमी मारा गया।

मुशद्दीलाल : तुम झूठ बोल रहे हो, सरासर झूठ। तुम्हारे हाथ से आदमी मर ही नहीं सकता।

माइकल : कैसे?

मुशद्दीलाल : आदमी कल मरा है। तुम पिछले परसों से मेरी हिरासत में हो, डकैती के केस में। मैं तफतीश कर रहा हूं। परसों से, समझे। निकालो पचास हजार रुपये।

माइकल : कत्ल केस में तो ये वहुत कम होंगे, बॉस!

मुशद्दीलाल : तुम ठीक कह रहे हो। मेरे मुंह से अचानक पचास हजार निकल गया। कत्ल के केस में पांच लाख भी थोड़ा है।

माइकल : डन।

लक्खीसिंह और हजारासिंह जोर से कहकहा लगाकर हाथ मिलाते है।

मुशद्दीलाल : क्या वात है, छोकरी, क्यों सिसकियां भर

रही है ?

लडकी गरीब आदमी की तो इज्जत ही सब कुछ होती है, माई-बाप। इन दोनो हरामजादो ने धोखे से मेरी इज्जत लूट ली। मुझे बरबाद कर दिया। मुझे कही का नही छोडा। इसाफ मागने आयी हू, माई-बाप।

मुशद्दीलाल इमाफ! शहर के सबसे बडे शरीफ आदमियो पर तोहमत लगाकर हमसे इमाफ चाहती हो। हतक इज्जत का दावा ठोकेंगे तो नानी याद आ जाएगी। दफा हो जाओ यहा से, नही तो वेश्या एक्ट मे बद कर दूगा। (उन दोनो की ओर देखकर) पचास हजार।

दोनो डन।

लक्खी और हजारा कहकहा लगाकर हाथ मिलाते है। कहकहे के साथ ही लाइट ऑफ हो जाती है।

आवाज इस तरह उस इसाफ और कानून के रखवाले का जुल्म बढता गया। बदमाशो, जेबकतरो, दस नम्बरियो के हौसले बुलद होते गये। शरीफ आदमियो का जीना इस इलाके मे मुश्किल हो गया। सरकार के गुप्तचर विभाग ने कोतवाल मुशद्दीलाल के काले-कारनामो का चिट्ठा ऊपर तक भेज दिया। मुशद्दीलाल को लाईन हाजिर होना पडा। कहते हैं जब नाउम्मीदी चारो ओर से घेर लेती है तो उम्मीद की किरण

जरूर दिखाई पड़ती है। उसी उम्मीद के साथ सरकार द्वारा नये विचार और नयी ट्रेनिंग देकर भेजा गया इस इलाके में नया कोतवाल। नया कोतवाल···नया कोतवाल—जो काम से भी रतन है और नाम से भी रतन।

दूसरा दृश्य

पर्दा खुलते ही लक्खीसिंह ड्यूटी कास्टेबल दायी ओर और यूसुफ मिया हेड कास्टेबल बायी ओर अपनी-अपनी कुर्सिया पर बैठे हुए फाइले चैक कर रहे है। पीछे बेंच पर सरदार हजारासिंह, जिसकी दो फितिया है, बैठा हुआ ऊध रहा है। इतने मे टेलीफोन की घटी बजती है।

लक्खीसिंह (रिसीवर उठाते हुए) जयहिंद! थाना कूचा घासीराम से ड्यूटी कास्टेबल लखीसिंह बोल रहा हू, जनाबेआली! जी, कौन? 'अरे वकील साहब! आपको अभी तक पता नही कि कोतवाल मुशहीलाल'का ट्रासफर हो गया है। साब, वह तो लाईन हाजिर हो गये है। उनकी जगह आये है नये कोतलवाल रतन साहब! क्या आप उनको जानते हैं साब? अच्छा, तो आपके क्लास-फैलो रहे हैं साब! फिर तो मजा ही आ जायेगा साब! हम तो बेकार ही डर रहे थे। अच्छा साब, जयहिन्द।

एक विकलांग अंदर आता है।

विकलांग : हुजूर, क्या मैं अन्दर जा सकता हूं ?

हजारा : ओ फिट्टे मुंह जम्मन वाली दे। भूतनी देया पुत्रा अन्दर वडके पूछना पया ऐ, क्या मैं अन्दर आ सकता हूं।

विकलांग : माफ करना, हवलदार जी।

लक्खी : बोल, तुझे क्या तकलीफ है ?

विकलांग : साब ! सारे दिन की कमाई के भी पूरे पैसे नहीं बचते। आपका आदमी बहुत तंग करता है।

लक्खीसिंह पैसे बचें या न बचें, इसके हम जिम्मेवार नहीं। हमारा आदमी जो मांगता है, तुम्हें देना ही पड़ेगा नहीं तो कल से वहां काम बंद कर दे।

विकलांग : मेरी तहबाजारी तो उसी जगह की है, सरकार। काम बंद कर दूंगा तो घरवालों को क्या खिलाऊंगा।

यूसुफ : तेरे घरवालों का ठेका हमने ले रखा है क्या ? महीना तो तुझे देना ही पड़ेगा चाहे चोरी कर या डाका डाल।

विकलांग : मैं तो जीते-जी मर जाऊंगा, हुजूर। मेरे घरवालों पर तो दया करो।

लक्खी : अगर दया ही करनी होती तो हम पुलिस में ही क्यों भरती होते !

यूसुफ : किसी मंदिर या मस्जिद के पुजारी या इमाम न बने बैठे होते।

हजारा या गुरुद्वारे दे ग्रंथी बने होदे। मुफत दा वडा प्रसाद छकदे त मौजा मारदे।

(रतन का प्रवेश)

रतन मौजे तो अब भी मार रहे हो तुम लोग। अच्छी-खासी तनख्वाह मिलती है सरकार से। उसके अलावा कपडे और खाने मे भी कमी नही रहती।

विकलाग फिर ये हम जैसे विकलागो से क्यो मागते रहते हैं, हुजूर?

रतन तुमसे ये क्या मागते है?

विकलाग ये नही, इनका आदमी महीना मागने आता है। न मिलने पर बुरी-बुरी गालिया देता है और सामान ले जाने की धमकी भी देता है।

रतन क्या मतलब?

विकलाग साहब, बूढी मा ने लोगो के बर्तन साफ कर-करके मुझे बी० ए० तक पढा दिया पर लाख यत्न करन पर भी नौकरी न मिली। सरकार ने मेरी हालत पर तरस खाकर और मेरे घर की दुर्दशा देखकर मुझे तहबाजारी दे दी, जिसके द्वारा बूढी मा और तीन छोटे बहन-भाइयो का पेट भर जाता है। महीने की रकम देने पर कई-कई दिन घरवालो को फाके काटने पडते है।

हजारा फिट्टे मुह जम्मन वालो दे। सावजी, बिलकुल झूठ बोल रया ऐ। भारत बीच कोई भूखा मरदा

ही नहीं भावें काम करे या न करे। ए ओई ते आजादी ए। ए ओई ते इनकलाब ए। इनकलाब जिन्दाबाद !

रतन : चुप रहो ! शरम नहीं आती आप लोगों को ! एक विकलांग जिस पर भगवान की मार है, उसको भी नहीं बख्शते। चुल्लू-भर पानी में डूब मरने की बात है। भगवान ने इसको जिस्म से विकलांग बनाया, लेकिन आप लोग दिलो-दिमाग के भी विकलांग हैं जो एक गरीब विकलांग से रिश्वत लेते हुए भी नहीं झिझकते। (विकलांग से) घबराओ नहीं, मैं तुम्हारी पूरी मदद करूंगा। अगर मेरे इस थाने का कोई भी आदमी तुम्हें या तुम्हारे साथियों को तंग करे तो फौरन मेरे पास चले आना।

विकलांग : थैंक यू। थैंक यू वेरी मच, सर ! मैं आपका एहसान जिन्दगी-भर नहीं भूलूंगा। आपने हमें फाकों से बचा लिया। भगवान आपका भला करे। गरीबों और अपाहिजों की दुआएं आपके साथ हैं। भगवान करे आप दिन दुगुनी रात चौगुनी तरक्की करें। (जाता है।)

कोतवाल भी अपने कमरे मे जाता है। क्षणिक विराम के बाद जब दोबारा परदा उठता है तो कोतवाल रतन अपने कमरे से फाइलें लेकर बाहर आते हैं और अपने थाने के कर्मचारियों को सम्बोधित करते हैं।

रतन मैं आप लोगों के बीच अपने-आपको पाकर बहुत खुश हूँ। और मुझे उम्मीद है कि आप लोग एक परिवार की तरह अपनी ड्यूटी को पूरा करेंगे। मुझे मालम है कि आपमें से कई मेरे से उम्र मे बड़े और तजुर्बेकार है। पिछले थानो मे मुझे जो-जो सफलताएँ मिली उसमे वहा के कई साथियो का बहुत बडा हाथ था। मुझे पूरा विश्वास है कि उनकी सहायता के बिना मुझे यह सफलता मिलना न मुमकिन थी। डी० आई० जी० साहब ने मेरे पिछले रिकार्ड को देखते हुए इस थाने का चार्ज देते समय मुझे बताया कि इस इलाके मे शराब की कई नाजायज भट्ठिया, जुआखाने और बदकारी के कई अड्डे है। शहर के मशहूर जेबकतरो और स्मगलरो का निवास भी खुश-किस्मती से इसी इलाके मे है। मैं उम्मीद करता हूँ कि इस भ्रष्टाचार को मिटाने मैं आप लोग मेरा साथ दगे। वैसे इस इलाके मे कितने दस-नम्बरी है ?

यूसुफ हुजूर, हमारे इलाके मे कुल मिलाकर नौ दस-नम्बरी थे। अल्ला के फजल से अब सात रह गए है।

रतन बाकी दो का क्या हुआ ?'

यूसुफ होना क्या था, अल्ला मिया का बुलावा आ गया और दोनो खुदा को प्यारे हो गये।

ही नहीं भावें काम करे या न करे। ए ओई ते आजादी ए। ए ओई ते इनकलाव ए। इनकलाव जिन्दाबाद !

रतन : चुप रहो ! शरम नहीं आती आप लोगों को ! एक विकलांग जिस पर भगवान की मार है, उसको भी नहीं बख्शते। चुल्लू-भर पानी में डूब मरने की बात है। भगवान ने इसको जिस्म से विकलांग बनाया, लेकिन आप लोग दिलो-दिमाग के भी विकलांग है जो एक गरीब विकलांग से रिश्वत लेते हुए भी नहीं झिझकते। (विकलांग से) घबराओ नहीं, मैं तुम्हारी पूरी मदद करूंगा। अगर मेरे इस थाने का कोई भी आदमी तुम्हें या तुम्हारे साथियों को तंग करे तो फौरन मेरे पास चले आना।

विकलांग : थैंक यू। थैंक यू वेरी मच, सर! मैं आपका एहसान जिन्दगी-भर नही भूलूंगा। आपने हमें फाकों से बचा लिया। भगवान आपका भला करे। गरीबों और अपाहिजों की दुआएं आपके साथ हैं। भगवान करे आप दिन दुगुनी रात चौगुनी तरक्की करें। (जाता है।)

कोतवाल भी अपने कमरे मे जाता है। क्षणिक विराम के बाद जब दोबारा परदा उठता है तो कोतवाल रतन अपने कमरे से फाइलें लेकर बाहर आते हैं और अपने थाने के कर्मचारियों को सम्बोधित करते हैं।

रतन मैं आप लोगो के बीच अपने-आपको पाकर बहुत खुश हूँ। और मुझे उम्मीद है कि आप लोग एक परिवार की तरह अपनी ड्यूटी को पूरा करेंगे। मुझे मालम है कि आपमे से कई मेरे से उम्र मे बडे और तजुर्बेकार है। पिछले थानो मे मुझे जो-जो सफलताएँ मिली उसमे वहा के कई साथियो का बहुत बडा हाथ था। मुझे पूरा विश्वास है कि उनकी सहायता के बिना मुझे यह सफलता मिलना न मुमकिन थी। डी० आई० जी० साहब ने मेरे पिछले रिकार्ड को देखते हुए इस थाने का चार्ज देते समय मुझे बताया कि इस इलाके मे शराब की कई नाजायज भट्ठिया, जुआखाने और बदकारी के कई अड्डे है। शहर के मशहूर जेबकतरो और स्मगलरो का निवास भी खुश-किस्मती से इसी इलाके मे है। मैं उम्मीद करता हूँ कि इस भ्रष्टाचार को मिटाने में आप लोग मेरा साथ दगे। वैसे इस इलाके मे कितने दस-नम्बरी है ?

यूसुफ हुजूर, हमारे इलाके मे कुल मिलाकर नौ दस-नम्बरी थे। अल्ला के फजल से अब सात रह गए है।

रतन बाकी दो का क्या हुआ ?'

यूसुफ होना क्या था, अल्ला मिया का बुलावा आ गया और दोनो खुदा को प्यारे हो गये।

हजारा : वड़े चंगे सन विचारे साव जी। कदे-कदे सारे थाने दी सेवा हुंदी सी। पिछली दिवाली ते हर मिम्वर नू मिठाई दा डिब्बा मिलिया सी।

लक्खी : कभी तो अक्ल की वात किया कर, हजारा सिंह।

हजारा : फिट्टे मुंह जम्मन वाली दे। सच दे नां ते तां लोका नूं पीड़-ईपैं जांदी ऐ। किसे दी अच्छाई तां सुन ई नहीं सकदे। तुसी दसो साहव जी कि दस नम्बरी कदी सुधर नहीं सकदे!

रतन : सुधर क्यों नहीं सकते। कोशिश सच्ची होनी चाहिए। जव विगड़े हुए जानवरों को सुधारा जा सकता है तो फिर इन्सानों को सुधारना क्या मुश्किल है।

हजारा : सुन लवो लक्खी ते यूसफ फिर न कहना किसे ने दसिया नहीं। मार-मार के जान ई कढ लैंदें ओ विचारियां दी।

यूसुफ : लातों के भूत वातों से नही मानते, हजारासिंह।

रतन : लेकिन इसका मतलव यह नहीं है कि लोगों को सुधारने के लिए उनको पीटा जाये।

लक्खी : विना पिटाई के कोई सुराग भी तो नहीं मिलता साहव।

रतन : यह पुराना तरीका है। इससे विगड़े हुए और भी विगड़ जाते हैं और फिर उन्हें रास्ते पे लाना और भी मुश्किल हो जाता है। (महात्मा गाधी

की तसवीर को देखकर) मगर प्यार वह हथियार है जिसके सामने सभी झुक जाते हैं। हम पुलिसवाले कितने बदनाम है। लोग हमारे नाम से ही डरते है। हम लोगो को एक हौवा समझा जाता है। जहा इस डिपार्टमेट की पूजा होनी चाहिए, वहा इसको नफरत की निगाह से देखा जाता है।

यूसुफ इससे क्या फर्क पडता है। आप लाख अच्छा काम करें पर लोग आपको बदनाम करेंगे। क्योकि हम पुलिसवाले जो ठहरे।

रतन सो तो ठीक है लेकिन कभी आप लोगो ने यह भी सोचा है कि ऐसा क्यो होता है।

हजारा तुसी दस्सो न साव जी माडे पिछो सानू लोकी उल्लू दा प मेरा मतलब ऐ गला क्यो कडदें ने ?

रतन क्योकि हम पुलिसवाले कभी-कभी बेकसूर लोगो को नाजायज तग करते है, इसीलिए हम लोग बदनाम है। असली मुजरिम को पकडने मे लोग हमारी मदद नही करते है। क्योकि उन्हे महसूस हो चुका है कि हम उन्हे खामखाह तग करेंगे। पचास बार थाने बुलायेंगे और परेशान करेंगे। और यही कारण है कि असली मुजरिम बच जाते हैं और बेकसूर लोगो को सजा हो जाती है। लेकिन

रामचमेली आती है। साथ लच्छू भी है।

रामचमेली . लेकिन मैं ऐसा नही करती, बाबू। जेबकतरो,

वदमाशों और शराबियों की दुश्मन हूं, दुश्मन, वावू। सब डरे हैं मेरी इस छुरी से। ऐतवार नहीं तो पूछ लो इस लच्छू जेवकट से।

रतन : तुम कौन हो? और इसको यहां क्यों लायी हो?

रामचमेली : इसी से पूछ ले न, वावू! सुना है दिल्ली के सारे वदमाश और जेवकतरे तेरे नाम से भी डरते हैं।

रतन : क्या तुम मुझे जानती हो?

रामचमेली : अरे, मैं किसको न जानू हूं वावू। रामचमेली हूं, कोई घसीटो परियारिन तो नहीं।

रतन : ओह, समझ गया। लेकिन इसने क्या किया है?

रामचमेली . डी० टी० सी० की वस में एक औरत का नैकलेस उतार लिया इस साले ने। ज्यों ही इसने नैकलेस निकाला तभी मैंने पीछे से इसकी गर्दन पर छुरी रख दी और नैकलेस पाकिट से निकाल लिया।

रतन : कहां है वह नैकलेस?

रामचमेली वह तो मैंने उसी औरत को दे दिया, जिसका माल था।

रतन : उसको तो यहां लाना चाहिए था।

रामचमेली : ताकि वेचारी औरत को एक साल वाद मिलता। मुझे वुद्धू न समझो, वावू। भले ही मैं पढ़ी-लिखी न सही, लेकिन गुडी हुई हूं। नैकलेस न सही, नैकलेस-चोर तो तुम्हारे पास है। पलीज, टीच हिम ए गुड लैसन।

रतन : तुम तो कह रही थी कि तुम पढ़ी-लिखी नहीं हो, फिर अंग्रेजी कैसे जानती हो?

रामचमेली ओ! मेरा बाप रगरेज का बटलर था, बडी एगरेजी वोलता था। गुस्से मे कहता, था पलीज टीच हिम ए गुड लैसन।

रतन तुमने तो मर्दों को भी मात कर दिया।

रामचमेली मर्द तो हवस के भूखे होते है [illegible]

रतन वो कैसे ?

रामचमेली तुम भी तो मर्द [illegible], बाबू !

हजारा फिट्टे मुह जम्मनेवाली दे— [illegible] वी कोई [illegible] दी गल है। पुलिस दा [illegible] भरती होना है तो पहला डाक्टरी हुदो ऐ, डाक्टरी।

रतन (जेबकतरे से) क्या यह ठीक है कि तुमने उस औरत का नैकलेस चुराया था।

लच्छू लेकिन साब, वह तो रोल्ड-गोल्ड का था।

रतन शट-अप !

रामचमेली अच्छा बाबू मै चलती हू। आहिस्ता-आहिस्ता यहा के सब जेबकतरो, शराबियो और बदमाशो के अड्डे में तुम्हे बतला दूगी। (जाने लगती है।)

रतन ए सुनो, क्या तुम इन सबके अड्डे जानती हो ?

रामचमेली रामचमेली हू, बाबू, कोई घसीटी घसियारिन नही। मेरी इस छुरी से सब डरे है बाबू।

रतन लेकिन तुम छुरी क्यो रखती हो ?

रामचमेली छुरी न रखू तो ये मुए क्या मुझे जीने दे ! राड तो रडापा काट ले, रडवे काटने भी दें।

रतन तुम काम क्या करती हो, रामचमेली ?

रामचमेली मेहनत-मजदूरी करती हू, बाबू ! किसी से माग

कर नही खाती। कभी-कभी खान के होटल से दो बोतल शराब की लाकर बेच देती हूं। दो पैसे बच जाते हैं। मुझे बड़ा प्यार करता है होटल वाला खान।

रतन : तो उसके होटल में शराब का धन्धा भी होता है?

रामचमेली : वह काहे को करने लगा शराब का धन्धा। वह तो दूसरे ही धन्धे करता है। शराब की भट्टियां तो दूसरी जगह लगी हुई हैं। पिछले कोतवाल का एक-एक हजार रुपया बंधा हुआ था एक-एक भट्टी से।

रतन : अच्छा!

रामचमेली : एक बार मेरी पीठ पर भी हाथ रख दो तो मैं भी एक भट्टी खो लूं तेरे इलाके में। राम कसम, हर महीने दो हजार रुपये तेरी जेब में डाल दिया करूंगी।

रतन : मैंने सोचा था कि शायद तुम एक अच्छी लड़की हो, पर···

रामचमेली : हाय दैया! जरा-सी पैसे की बात की। और हम अच्छी नहीं रही। वाह बाबू, वाह! गरीब मेहनत करे तो बदनाम—पैसे वाला सौ-सौ धन्धे करे तो नाम। अच्छा बाबू, राम-राम! (रामचमेली जाती है। उसके पीछे लच्छू भी जाने लगता है। हजारा उसे गर्दन से पकड़ लेता है।) तू किथे चलिया एँ भूतनी दे पुतरा। सिर तो नई कुंडा ते हाथी फिरे लुंडा। अ थाना ए कि नाई दी

हट्टी, जेडा मर्जी आवे टिन्ड मनावे ते जावे।

लच्छू क्या मैं पूछ सकता हू कि मेरा कसूर क्या है ?

रतन अभी बताता ह तेरा कसूर। हू इज योर गैंग लीडर ? मेरा मतलब है तुम्हारा उस्ताद कौन है ?

लच्छू मेरा कोई उस्ताद नही है, मैं अकेला हू और बेकसूर भी।

रतन तुमने नेंकलेस नही चुराया ?

लच्छू नही।

रतन नही। तो क्या लडकी झूठ बोल रही थी ?

लच्छू मुझे कुछ नही मालूम।

हजारा ओ मालम दे पुतरा, सिद्दी तरहा दस दे नही ते वेखय्या ए डडा। (डडा मारने लगता है पर रतन रोक देता है।)

रतन मैं आखिरी बार पूछता हू, तुम्हारा उस्ताद कौन है ?

लच्छू मेरा कोई उस्ताद नही और ना ही मैंने नेंकलेस चुराया है।

रतन नही चुराया है ? (अचानक पट मे घूसा मारता है।) बोल, कौन है तेरा उस्ताद ?

लच्छू कोतवाल साहब, आप कानूनी जुर्म कर रहे हैं, आपके पास नेंकलेस चुराने का कोई सबूत नही है।

लक्खी (जोर से चाटा मारता है।) चुप वे सबूत के बच्चे, हमे कानून सिखाता है। (लच्छू के मुह से खून निकलता है।)

लच्छू : अबे ओ हवलदार के बच्चे, मां का दूध पिया है तो बाहर आ—चीर के रख दूंगा। (मारने आता है, मगर हजारा और यूसुफ पकड़ लेते हैं।)

यूसफ : साहब, यह ऐसे मानने वाला नहीं है, इसे कमरे में ले चलते हैं।

लक्खी : यूसुफ ठीक कहता है साहब, यह ऐसे मानने वाला नहीं है। (दोनों उसे अन्दर ले जाने लगते हैं।)

रतन : ठहरो, इसे छोड़ दो। (छोड़ देते हैं।) सुनो लच्छू, सच-सच बता दो तुम्हारा उस्ताद कौन है? (लच्छू चुप रहता है।) मैं वायदा करता हूं कि तुम्हें छोड़ दिया जायेगा, लेकिन एक शर्त पर—तुम्हें यह धन्धा छोड़ना पड़ेगा। एक नई जिन्दगी शुरू करनी होगी, जिसका नाम इन्सानियत होगा।

(लच्छू को उसके पिता की बात याद आती है।)

आवाज : बेटा, यह धन्धा बन्द कर दो। इसमें कोई फायदा नहीं है, कोई इज्जत नहीं है। मेहनत-मजदूरी करो। दो रूखी-सूखी खा लेंगे पर यह रोटी गले में कांटों की तरह चुभती है…कांटों की तरह।

लच्छू : (रो पड़ता है) कोतवाल साहब, आप मुझे छोड़ देंगे न! आप मुझे छोड़ देंगे! मैं मरे हुए बाप की कसम खाकर कहता हूं मैं यह काम कभी नहीं करूंगा, कभी नहीं करूंगा…।

रतन : उठो, भाई! बहादुर लड़के कभी रोया नहीं

करते। मैं तुम्हारी हर तरह से मदद करूगा।

लच्छू तो सुनिये कोतवाल साहब !

(फोन आता है।)

रतन (फोन पर) एस० एच० ओ० रतन स्पीकिंग। यस सर, मैं अभी आया, राईट सर ! थैंक्यू सर। हजारा सिंह, एस० पी० साहब के दफ्तर मे यह फाइल दे आना। (लक्खी से) शाम को मैं दिलदार खान से मिलना चाहता हू। सुना है उसके होटल मे सभी धन्धे होते है। (यूसुफ से) इलाके के सब दस नम्बरिया को बारी-बारी बुलवा लो। मैं खुद उनसे बात करूगा। कॉलेज यूनियन के प्रेसिडेण्ट के घर का पता लगा लेना, मैं किसी वक्त भी उससे मिल लूगा। चलो, लच्छू। (रतन लच्छू और हजारा बाहर जाते है।) मेरी रवानगी डाल देना।

लक्खी उस्ताद, अगर इसका ऐसा ही हाल रहा तो फाके काटने पडेंगे। पुराना कोतवाल तो एक कप चाय पर लट्टू हो जाया करता था। इसका मिजाज तो सातवें आसमान पर रहता है।

यूसुफ फिकर न कर बच्चू, बकरे की मा कब तक खैर मनायेगी। आज नही तो कल, रास्ते पर तो उसे आना ही पडेगा। नही तो हर तीसरे दिन दस-दस मुर्गाबी का गोश्त, साहब के घर उसका बाप पहुचायेगा क्या ! बडा बना फिरता है हरिशचन्द्र का बच्चा !

लक्खी : उस्ताद, तू यह किस हरिश की वात कर रहा है ?

यूसुफ : हरिश की नहीं, महाराजा हरिशचन्द्र सत्यवादी की। वह सातवीं की किताब में आठवें सफे वाला।

लक्खी : फिर वही वेतुकी वात, प्यारे, यही हाल रहा तो मेरे बच्चे भूखे मर जायेंगे।

यूसुफ : क्यों ? गुरुद्वारों में लंगर बंद हो गया है क्या ? जब तक लंगर है तब तक भूखे मरने का सवाल ही नहीं पैदा होता। हां यार, उस दिन लंगर की दाल थी बड़ी मज़ेदार।

लक्खी : कभी तो काम की वात किया कर, यूसुफ ! अगर लच्छू ने बता दिया कि हम दोनों उसकी पीठ पर हाथ रखते है तो···?

यूसुफ क्या उसने हमारे हाथ से मरना है। लच्छू भले ही छोटा दिखाई देता है, लेकिन मैंने उसके कई करतब देखे है। पिछले शनिवार की वात है उसके उस्ताद ने ऐन चौक पर मजमा लगाया हुआ था कि यह भी वहां पहुंच गया। बद्री लगा हुआ था शिलाजित की गोलियों के बखान में। वहीं दस-पंद्रह वावू लोग भी थे। वह कह रहा था कि मैं दवा बेचता नहीं हूं। मेरे उस्ताद का कोल है कि जवानों को नई जिन्दगी, नई ताकत, नई जवानी का पैगाम सुनाऊं, मुरझाये हुए दिलों को खिलाऊं, बुझते हुए घरों का चिराग जलाऊं जरा देखो यह तिलस्मी गोलियां। कीमत सिर्फ

एक रुपया, एक रुपया, एक रुपया   इतने मे मजमे से आवाज आयी—पकडो, पकडो ! लेकिन लच्छू को पकडना क्या खाला जी का घर था। वह आख झपकते ही नौ-दो-ग्यारह हो गया।

लक्खी अगर इतना फुरतीला है तो रामचमेली के हाथ कैसे चढ गया !

यूसुफ वह कौन-सी इन लोगो से कम है। थाना चौक वाले बता रहे थे कि वहा उसने कई भट्ठिया पकडवाई हैं, जिनमे नाजायज शराब बनाई जाती थी।

लक्खी जरूर कुछ-न-कुछ इनाम ले मरी होगी।

यूसुफ इनाम तो ऐसो को क्या मिलेगा। दो-चार बोतल से ही खुश कर दिया होगा बख्शी ने। पुराना खुर्राट कोतवाल है। (टेलीफोन की घटी बजती है।) जयहिंद, थाना कूचा घासीराम से ड्यूटी कास्टेबल बोल रहे है जी। जी, कोतवाल साहब जरा तफ्तीश के लिए गए हुए है। जी, जी बहुत अच्छा, समझ गया जी जी बहुत अच्छा जी, जयहिंद।

(इतने मे दीपक का प्रवेश)

दीपक जयहिंद ! कहा है रतन ? चार्ज ले लिया उसने इस थाने का ?

लक्खी जी साहब, बहुत ही नेक आदमी है।

दीपक हा, मैं उसे बचपन से ही जानता हू। वैसे कई केसो मे मेरा उससे टकराव रहा है।

नई-नई मुर्गी है। काबू कर लोगे तो पौ-बारह हो जायेंगे।

यूसुफ : यह वह मुर्गी नहीं है जो आसानी से हाथ लग जायेगी।

दीपक : वाह, यूसुफ मियां! पहली बार बुजदिली के अलफाज तुम्हारे मुंह से सुन रहा हूं। अरे भले मानस, तुमने अच्छे-अच्छे कोतवालों को अपने काबू में किया है। 'नहीं' को 'हां' में बदलवाने के लिए तुमसे बड़ा सानी मैंने देखा ही नहीं। क्या पुलिस और क्या जेबकतरे, सब तुम्हारे नाम का लोहा मानते हैं।

लक्खी : और फूंक न देना, वकील साहब, नहीं तो यह गोलगप्पा हो जायेगा और हम कहां उठाते फिरेंगे इसे।

दीपक : फिजूल की बातों में वक्त मत जाया करो, लक्खी! जब रतन आये तो उसे तरीके से समझाओ कि रामपुर की डकैती के केस में चश्मदीद गवाह पेश न करें। मैंने डाकुओं के सरदार हीरे से बात कर ली है। पच्चीस हजार के जेवर और कार उसके दरवाजे पर पहुंच जायेगी···और आप लोगों को मुंहमांगा इनाम मिलेगा।

लक्खी : इतनी बात करने के लिए इतना दिल चाहिए, वकील बाबू! थोड़ी देर पहले रामचमेली आयी थी।

यूसुफ गुण्डा की सरदार।

दीपक औरत और गुण्डो की सरदार!

लक्खी दो हजार रुपया महीना बाध रही थी।

यूसुफ साहब के कान पर जू तक नही रगी।

(दिलदार खान का प्रवेश)

खान जू छोडकर चिमगादड भी रगगा सतरी वादशाह वक्त वक्त की वात है। सुना है शादी नही बनाया तुमार कोतवाल साहब ने।

लक्खी जिसे ताजा दूध मिल जाये उसे भैंस रखने की क्या जरूरत?

दीपक क्या मतलब?

खान मतलब हम समझात है वकील बाबू! ए तुम हमारा होटल म कितने मुद्दत स आता है? तुम देखता होगा बाबू कि हम इन लोगा का कितना खातर करता है। खुदा जानता है बाबू मीट, मछली मुर्गमुसल्लम सब कुछ खिलाता है। लेकिन ये पुलिसवाला अपन बाप का भी नही सगा होता है।

(हजारा का प्रवेश)

हजारा फिट्टे मुह जम्मन वाली दे। एक डाकू हत्थ आया सी। ओवी हत्थो नस गया नही ते रब दी सौ ऐ फीतिया दे बदले फुल लगे होद ते तुस्सी सारे मारदे सलूटा मैंनू।

लक्खी डाकू और तेरे हाथ!

यूसुफ कही खाब तो नही देख रहा, हजारासिह!

हजारा : मैं भूल गया फिट्टे मुंह जम्मन वाली दे, जेबकतरा सी, पकड़्या ते किसे होर ने सी, पर मेरे हत्थ चढ़ गया, दंदी वढ़ के नस गया, नहीं ते तुस्सी सारे मारदे सलूटा मैंनूं।

दीपक हजारा सिंह, तुमने तो पंजाबियों का नाम भी बदनाम कर दिया है। कहीं पुलिसवालों के हाथ से जेबकतरा भाग सकता है?

हजारा : फिट्टे मुंह, ऐस विच पंजाबियां दा की दोष ए, गलती ते दंदी दी ए। मेरा बस चले ते मैं कानून बना देयां कि कोई वी जेबकतरा दंदी दा इस्तेमाल पुलिस वालया ते नहीं करेगा, नहीं तो उसदे दंद कढ़ दित्ते जानगे।

खान : खोचे, एक बात बताओ संतरी बादशाह!

हजारा : दो पुच्छो बादशाहो, तदुंरी मुर्गयां दे राजयों।

खान : खोचे, तुमको पोलूस में किसने भरती किया है!

हजारा : फिट्टे मुंह जम्मन वाली दे, ए वी कोई पुच्छन दी गल ए, साडा भाइया आई जी साहब दी खास अरदली सी पट्ठे वढ़दा सी पट्ठें। पट्ठें समझ दे हो न—भैंसा दा फूड। आई जी सासब बड़े हैपी मन हमारे भाइया तो हामरे भाइया ने पिंड दे सब ऐरे-गैरे-नत्थू-खैरे पुलिस विच भरती करवा दित्ते। ते सानूं वी तिन फितियां लगवा दित्तियां।

दीपक : मगर तुम्हारी तो दो हैं, तीसरी का क्या हुआ।

हजारा : होणां की सी वकील साहब, तुस्सी तो पढ़े-लिखो

हो। तीजी फीती साडे सविधान वावड लचक्दार सी, ऐ क्दे लग जादी ए, क्दे लैह जादी ऐ।

दीपक वह कैसे ?

हजारा गलती नाल चोर या जेवक्तरा पक्डया जाये ते लग जादी ए, जे नस जाये ते लैह जादी ऐ।

लक्खी घरवालो ने तेरा नाम हजारा सिंह कैसे रख दिया। काम मे तो धेला सिंह भी नही है।

हजारा फिट्टे मुह जमनवाली दे। तू जट दा जट ही रहेगा। ओ फुमडा क्दे ना ते वी जाई दा। ना होदा ए गरीब दास ते होदा लखा रुपया दा मालक जे ना होवे दौलत राम ते पल्ले क्ख भी नही होदा, ओ नई दिसदा ई बालक राम ब्रह्मचारी, ना दो ब्रह्मचारी ते बारह बच्या दा पयो।

यूसुफ मतलब यह कि तुम्हारा हाल भी वही है—नाम वडे और दर्शन ।

हजारा दर्शनो ते ना जायो यूसफ साहब, दर्शनो कोलो ने अस्सी वडे बडे आ। जदो साडा ब्याह होया सी दर्शनो विचारी दी उमर ते कुल पद्रह वरया दी सी। ते अस्सी पैतिया दे। भला होवे दर्शनो दी दादी दा, जिनू अक्खो घट दिसदा सी। अस्सी ओहनू पसद आये ते ओहने साडे दर्शनो नाल साडे फेरे कराये। नही ते रब जाणदा जे अस्सी ते टुल इ खाडकादे रहदे नवे वकीला दी तरह।

दीपक नये वकीलो की तरह।

हजारा : आहो जी, साडा मतलब ए जिवें नवे वकील अदालत विच धक्के खादें रहदे जे, कद्दे एक गाहक दे पिछे कदे दूजें दे। मुवक्कल हत्थवी हत्थ लग जाये ते पुराने वकीला दे मुनशी फंसा के लैं जादें जे। नवे वकील विचारे त पटियां ई हिलादे रहदे जे (टेलीफोन की घंटी बजती है)

लक्खी : जयहिन्द ! थाना कूचा घासीराम से ड्यूटी कान्सटेबल लक्खी राम बोल रहा हूं जनावे आली···जी···कहां···गज्जू कटरे में···एक मिनट ···एक मिनट साहब ज़रा नोट कर लूं···लाश कहां पड़ी है ? जी समझ गया···जी हां···कौन ठीक है समझ गया···शुकरिया···आपका नाम···? हत्तेरे की नाम नही बताया।

यूसुफ : कौन था ?

लक्खी : किसी ने टेलीफोन पर बताया कि गज्जू कटरा के पास दो पार्टियों में झगड़ा हो गया है। बीच-बचाव में किसी और को छुरी लग गई, लाश वहीं पड़ी है। इलाका कौन्सलर और दूसरे नेता लोग वहां पहुंच गये हैं।

यूसुफ : ठीक है, कोतवाल साहब आयें तो बतला देना।

लक्खी : अगर वह न आये तो। ?

यूसुफ : अबे, आयेगा कैसे नही ! नौकरी नहीं करनी क्या, खालाजी का घर है।

लक्खी मेरा मतलब है अगर वह देर से लौटे तो।

यूसुफ : तो तू चला जा।

लक्खी तुम्हारे होते हुए मैं कैसे जा सकता हू तुम तो मेरे से सीनियर हो।

हजारा फिट्टे मुह जमनवाली दे। सब तो सीनियर ते अस्सी आ। फीतिया लैहदिया ते लगदिया रहदिया ने।

लक्खी ऐसा है तो तू ही चला जा।

हजारा चला ते जावा तुस्सी कहदे ओ चाकू चले ने, लहू जरूर निकलया होयेगा। रब जाणदा जे मेरा ते दिल कच्चा होण लग पैंदा ऐ। किन्ने-किन्ने दिहाडे मैंनू मीदर इ नही आदी एस वास्ते एस वेले मैं तुहाडे तो जनियर ते तुस्सी सारे मेरे तो सीनियर ओ।

दीपक एकदम नीचे आ गया हजारा सिह।

यूसुफ वकील साहब ठीक ही कहते थे कि तुमने पजावियो का नाम बदनाम किया हुआ है।

हजारा फिट्टे मुह (टेलीफोन की घटी बजती है।)

लक्खी जयहिन्द थाना कूचा घासीराम से ड्यूटी कान्सेटबल लक्खीसिंह बोल रहा हू जनाबे-आली ! जी, हा, बोल रहा हू हजूर आप कौन साहब बोल रहे है हजूर—जयहिन्द जनाब, सब ठीक है। हजर, अभी-अभी गज्जू कटरे से जी क्या आप वही से बोल रहे है जी हा, सब हाजिर है जी, सरदार हजारा सिंह भी है जी। जी साहब अभी भिजवाये देता हू जी। सरदार साहिब, साहब बहादुर ने आपको

मौका वारदात पर बुलाया है।

हजारा : बुलाया होसी तैनूं, होर कोई नहीं लभया मेरे सिवा, जिवें मैं वड़ा सोहड़ा होना वां, चले जाओ मेरे लक्खी शाह ते यूसफ पहलवान जी, क्यों मेरी जड़ा विच पाणी देन तूं तुले होये ओ।

यूसुफ : तू कौन सी अमरुद की जड़ है जो पानी लगने से गल जायेगी।

हजारा : रब जाणदा जे खून वेखदयां इ मेरी ते जान इ निकल आंदी जे, तिन्ने तिन्न दिहाड़े नींदर इ नहीं आंदी, साड़ी दर्शनों ते वाहे गुरु कोलों मनतां इ मंगदी रहदी ए।

लक्खी : यह बातें फिर करना, अब चला जा नहीं तो तुम्हें और दर्शनों को व्रत ही न रखने पड़ जायें। नौकरी खतरे में पड़ जायेगी।

हजारा : चंगा चौधरी, जे तूं कहना ते, चला इ जाना, पर रब जाणदा, तिन्ना दिन्ना लई नींदर हराम हो गई ए। (जाता है)

दीपक : सुना है खान, आजकल तुम्हारे होटल में बहुत बढ़िया माल रहता है। बाई दी वे, क्या रेट चल रहा है ?

खान : तुमसे क्या छिपाना है वकील ब्रादर, हमारा होटल में सोलह की उमर से सत्तर की उमर तक मिलेगा। रहा रेट का बात, जैसा काम वैसा दाम।

दीपक : जैसा काम वैसा दाम से तुम्हारा मतलब, खान ?

खान मतलब साफ है वकील बाबू सोलह से कम को तो हम काम ही नही देता है, बहुत तकलीफ होता है। अमारा दिल को तकलीफ होता है। सोलह साल से जो कम हमारे पास आता है हम जेब से उसको पैसा देकर पढने के लिए मजबूर करता है ताकि वो लिख पढकर देश का अच्छा आदमी बन सके। सोलह साल से ऊपर को हम किसी भी काम पर लगा सकता है जैसे बावर्ची, धोबी, खानसामा और बैरा।

दीपक और सत्तर से ऊपर को, खान?

खान खुदा जानता है इस वक्त भी हमारा होटल मे ग्यारह आदमी ऐसा है जो सत्तर साल से ऊपर है। हम उनसे कोई काम नही लेता है। बल्कि गोरमेंट की तरह उनको पेंशन देता है। हम उनका उतना इज्जत करता है जितना अपने वालदे मरहूम का किया करता था।

लक्खी आपके वालिद साहब का भी क्या होटल था खा?

खान यह कैसे हो सकता है सतरी बादशाह! सच बतलाना, तुमने कभी सोचा है कि अपने बच्चे को पुलिस मे भरती करेगा। कोई भी पुलिस वाला अपने लडके को पुलिस मे भरती नही करवायेगा, बल्कि उसको चपडासी बाबू बनवा डालेगा। वैसे ही मेरा बाप फ्रन्टीयर के इलाका गैर मे ट्रक चलाता था। क्या जवां मर्द

आदमी था। तुम तो उसके विठ का मुकावला भी नहीं कर सकता है। छः मन का पत्थर तो वह दांत से उठाता था, समझे।

यूसुफ : पुराने जमाने की वात और थी, खान। खालिस दूध-दही मिलते थे। अव दूध भी मिलेगा तो मलाई होगी ब्लाटिंग पेपर की और असली घी छोड़कर नकली भी नहीं मिलता।

खान : मिलता सव कुछ है संतरी वादशाह, मिलने की वात छोड़ो। हमारा मुल्क में किसी चीज की कमी नहीं। खोचे कमी है तो हमारा चाल-चलन की। यहां ब्लैक करने वाला, माल दवाने वाला, इज्जत वेचने वाला, इज्जत खरीदने वाला वहुत मिलेगा। खोचे, तुम यह क्या वात करता है। हमारा होटल में दो टिन घी लगता है। किधर से आता है। लाला लोग वोलता है दो के वदले दस लो। दुगना दाम दो, नगद माल लो। खोचे, खुदा जानता है हमारा दिल नहीं करता है, फिर भी लेता है नहीं तो इतना पलटन का पेट कैसे भर सकता है ?

दीपक : यह वातें छोड़ो खान, जो मैं पूछ रहा था उसको वताओ।

खान : वकील वावू, तुम समझता है हर इन्सान तुम्हारा माफिक जलील और कमीना है, तुम लोग इन्सान को वेचता है, खुदा को वेचता होगा। मैं अच्छी तरह से जानता हूं वकील साहव कि

तुम क्या पूछना चाहता है। हम लोग पठान हैं, न किसी का इज्जत बेचता है, न खरीदता है। गरीब आदमी पर हम जान देता है। तुम्हारा माफिक खून नही चूसता है। खोचे, दूसरे की बहू-बेटियो को बरी निगाह से देखने वाला खुदा का गुनाहगार होता है।

दीपक इतने पारसा न बनो, खान। सारा शहर जानता है कि तुम्हारे होटल मे क्या-क्या होता है।

खान सब होता है वकील बाबू, सब होता है, लेकिन जो तुम सोचता है वह नही होता है। खुदा जानता है वह नही होता है। हर इन्सान को अपना माफिक मत समझो।

लक्खी नही-नही, खान साहब, आप तो खामखाह नाराज हो रहे है। वकील साहब की आदत तो मजाक करने की है।

खान खोचे, हम को ऐसा मजाक पसन्द नही, जो किसी की इज्जत पर हमला करे। खोचे, तुम लोग हिन्दुस्तान मे रहता है, कोई यूरोप मे नही।

यूसुफ खान साहब, आप कभी यूरोप गये है ?

खान पाच दफा गया है, सतरी बादशाह, पाच दफा। जो हमने देखा है तुम सात जन्म भी नही देख सकता है। हमने इगलिस्तान का अग्रेज देखा, जिसके बाप का पता नही। हमने जर्मन का जवान देखा, जिसकी मा का पता नही। आस्ट्रेलिया का मैका देखा है जो हिन्दुस्तान मे

नहीं। हमने पैरेस का ब्यूटी देखा है। हमने सुराईदार गर्दन देखा है।

यूसुफ : हम मान लेते है कि तुमने सब कुछ देखा होगा। यह बताओ कि वहां लंगर होता है कि नहीं ?

खान लंगर ! तुम्हारा मतलब समुद्री जहाज के लंगर से है, संतरी बादशाह !

लक्खी : इसका मतलब तो सिक्खों के गुरुद्वारों के लंगर से है, खान !

खान . खुदा जानता है दुनिया का ऐसा कोई जगह नहीं, जहां सरदारों के गुरुद्वारे न हों। अफरीन है इस कौम पर जिसने हिन्दुस्तान का नाम सारी दुनिया में ऊपर कर दिया है। खोचे, हिन्दुस्तान की सिखावत तो गुरुद्वारों से ही पता चलती है।

यूसुफ : और इलाका कूचा घासीराम की सिखावित तो तेरे होटल से पता चलती है।

खान : क्यू शर्मिंदा करते हो, संतरी बादशाह। हमारा होटल तो तुम्हारा कोतवाल साहब के हाथ में है। एक हफ्ता से रोजाना छापा मार रहा है। खुदा भला करे तुम लोगों का जो पहले ही मुझे खबरदार कर देते हो, वरना हम कब का जेल की चारदीवारी में पड़ा होता।

यूसुफ : जेल की चारदीवारी में पड़ें तुम्हारे दुश्मन ! जब तक हम हैं, कोई टेढ़ी निगाह से तुम्हें देख भी नहीं सकता।

दीपक — ठीक तो कह रहे है यूसुफ मिया। इनका पेट भरते जाओ, अपना धन्धा करते जाओ।

खान — कितना फीस होगा, वकील बाबू ?

दीपक — किस बात का ?

खान — दो आदमियो के बीच मे न बोलने का ?

सतरी — इनको तो अपने होटल मे कुछ भी खिला दो, ये चुप हो जायेंगे।

खान — इसको बात छोडो, सतरी बादशाह। तुम क्या खाना चाहता है, बोलो तन्दूरी मुर्गा, चिकन रोस्ट मीट, मुर्गाबी चिकन करी, तीतर, बटेर या मुर्गी का टाग ?

(रामचमेली का प्रवेश)

रामचमेली — खबरदार खान, जो तूने एक चीज भी मुफ्तखोरो को खिलाई। क्यो सिर पर चढा रहा है इन निखट्टुओ को ! सुबह से तुझे ढूढती हुई आयी हू।

खान — खोचे, क्या बात है छोटा बुलबुल ! खुदा जानता है कि तुम्हारा माफिक हमारा भी बुलबुल है, लेकिन तुमारा माफिक दारू का धन्धा नहीं करता। तुम बहुत अच्छा है—हमारा बुलबुल का माफिक। छोड दो यह धन्धा, मेहनत-मजदूरी करो।

रामचमेली — इस वक्त काम की बात करो खान, फालतू मे वक्त जाया मत करो। मुझे तीन बोतल शराब जल्दी चाहिए—अभी, इसी वक्त, नहीं तो हिप्पी

हाथ से निकल जायेगा और मेरा-बना बनाया खेल बिगड़ जायेगा।

दीपक : वैरी गुड, क्या नाम है तेरा छमक-छल्लो ?

रामचमेली : छम्मक-छल्लो के बच्चे, तुझे किसने बीच में बोलने को कहा है ? दो आदमियों के बीच में बोलने वाला मूर्ख होता है। फूल-फूल, मेरा बाप कहता था रंगरेजी में।

दीपक : तेरा बाप !

रामचमेली : और नहीं तो क्या तेरा बाप। मेरा बाप तो रंगरेज का बटलर था, बड़ी रंगरेजी बोलता था। फट-फट रेलगाड़ी की तरह। गुस्से में कहता था प्लीज टीच हिम ए गुड लेसन।

खान : खुदा कसम, तुम भी क्या रंगरेजी बोलता है छोटा बुलबुल, ऐसा लगता है कि तुमने बी० ए० पास किया है।

रामचमेली : बी आ भी कोई क्लास होती है, मेरा बाप बोलता था कि मैं तुम्हें चौथी पास कराऊंगा, पर बेचारा…(रोती है।)

दीपक : क्यों, क्या हो गया था उसे ?

चमेली : इसक, इसक ! एक हिपन से इसक हो गया था उसे और वो ले गई मेरे बापू को रंगरेजिस्तान। और हाय रे मेरी मइया (और फिर रोती है।)

दीपक : तो क्या तुम्हारी मां भी नहीं है ?

चमेली : नहीं बाबू ! (रोते हुए) वह तो मेरे पैदा होने से पहले ही मर गई थी और मुझे रंडवा कर

गई थी ।~

दीपक लगता है इसके दिमाग के कुछ पेच ढीले है ।

खान हर गरीब आदमी के दिमाग का पेच ढीला होता है क्योकि उसको पेट पालने का मुसीबत होता है। इधर पेट तग करता है उधर दुनिया जीने नही देता है ।

चमेली क्यो इस बिल्ली के बच्चे के साथ दिमाग फोड रहे हो खान। ना जिसका दीन है ना ईमान। मेरा ग्राहक हाथ से निकल जायेगा तो रात की रोटी नसीब न होगी, अन्डरसटैंड ।

खान इधर स्टेड करने से क्या फायदा है छोटा बुलबुल। तुम उधर हमारा होटल मे जाकर स्टैंड करो, थोडी देर मे कोतवाल से मिलकर आता है।

चमेली बहुत अच्छा, देर न लगाना। नही तो हिप्पी भाग जायेगा और मेरा बना-बनाया खेल बिगड जायेगा। (चली जाती है।)

खान कितना मुसीबत है पेट पालने का, छोटा बुल-बुल कितना मुसीबत उठाता है। हम उसका अपने होटल मे रख सकता है लेकिन तुम्हारा माफिक खजीर का औलाद उधर बोत आता है। किस-किस का मुह पकड सकता है ।

दीपक तमीज से बात करो खान, नही तो अच्छा नही होगा ।

खान ओ तुख्म की औलाद, तुम हमका तमीज

सिखलाता है, कसम है पीर मानकी की, अभी तुम्हारा कीमा बना डालेगा।

दीपक : जा-जा। तेरे जैसे बहुत फन्ने खां देखे है। यहां मीठी-मीठी बातें करता है और होटल में बेईमानी करता है।

खान : जुबान सम्भाल कर बात कर, पठान सब कुछ बर्दाश्त कर सकता है मगर बेईमानी बर्दाश्त नहीं कर सकता। फिर तुम हमको बेईमान बोला तो खुदा कसम हम तुम्हारा टुकड़-टुकड़ा कर डालेगा।

दीपक : बकवास बन्द कर। मैंने भी कोई चूड़ियां नहीं पहन रखी है।

खान : तुख्म का औलाद, तुम फिर हमका गाली दिया अब हम तुमको नहीं छोड़ेगा। चाकू निकालने लगता है।

यूसुफ : ये क्या कर रहे हो खान। यह पुलिस चौकी है। (खान को पकड़ता है, लक्खी भी दीपक को पकड़ता है।)

दीपक : छोड़ दो मुझे, खान के बच्चे को मैं अभी देख लेता हूं।

(बाहर से आवाज आती है चोर-चोर, पकड़ो-पकड़ो लड़का हांपता-हांपता आता है।)

लड़का . संतरी साहब, मुझे बचाओ, मुझे बचाओ।

लक्खी . ऐ लड़के, क्यों शोर मचा रखा है? क्या बात है?

लड़का : वो लोग मुझे मार रहे हैं।

यूसुफ : क्या किया है तूने।

लड़का : चोरी !

लक्खी : चोरी ! चोरी की है तूने ?

लडका : हां, मैंने चोरी की है। मुझे हवालात में बंद कर दो।

लक्खी : वाह पहलवान के बच्चे। एक तो चोरी दूसरे सीनाजोरी। बन्द कर दो इसको, यूसुफ मियां !

खान : संतरी बादशाह छोड दो। इस साले की जान को (लडके को) क्या मामला है बच्चे।

लडका : मैंने चोरी की है।

खान : क्या चोरी किया है।

लडका : बटुआ (चोरी किया है।)।

लक्खी कहां है बटुआ ?

लडका : रास्ते में फेंक दिया।

लक्खी · चुप बे फेंक दिया के बच्चे।

खान : संतरी बादशाह बीच में नहीं बोलेगा।

यूसुफ : अजी कैसे न बोलें जी।

लक्खी : बन्द कर दो साले को, दो दिन जेल की रोटी खायेगा तो अपने आप बटुआ निकाल देगा।

लड़का : रोटी ! अन्दर रोटी मिलेगी। मुझे जल्दी बन्द कर दो। मुझे कुछ खाने को दो, मैं तीन दिन से भूखा हूं, मुझे जल्दी बन्द कर दो।

खान : ठहरो बच्चा, जब तुमने बटुआ चुरा लिया तो भागा क्यों नहीं ?

लडका : क्योंकि मुझे चोरी का तजुर्बा नहीं है और ना

ही मैं चोरी करना चाहता था।

लक्खी : फिर किसी डाक्टर ने चोरी करने को कहा था!

लड़का : नहीं, मैं खुद पुलिस के हाथों में आना चाहता था, इसलिए थाने चला आया। अब मुझे बन्द कर दो। ताकि मुझे खाने को मिले, मैं भूख से न मरूं, लाखों इन्सानों को खाने के लिए···

लक्खी : चुप बे, एक तो चोरी करता है, ऊपर से भाषण झाड़ता है। बता बटुआ कहां छिपा रखा है।

खान : संतरी बादशाह ठहरो, अभी बतायेगा।

यसुफ : ये ऐसे नहीं बतायेगा, देखो अब कैसे बटुआ निकालता है (मारता है)।

लड़का : हां-हां मारो-मारो, खत्म कर दो, सबको मार दो, जो मां के दूध की कीमत न चुका सके। उसे जीने का कोई हक नहीं है।

खान : लाले की जान, तुम क्या बोलता है ?

लड़का : हां खान भाई, जिस मां ने अपना सारा सुख न्योछावर करके पढ़ाया-लिखाया, उसे मैं कुछ नहीं दे सका। मैंने काम के लिए क्या नहीं किया दर-दर की ठोकरें खाई।

पैरों के तलवे घिसा दिए, फिर भी बेरहम दुनिया वालों को मुझ पर रहम नहीं आया। मैंने अपने जिस्म के कपड़े नीलाम कर दिए और चिल्ला-चिल्लाकर कहा—सुनो समाज के ठेकेदारों, मेरे इस कपड़े के बदले एक रोटी का टुकड़ा दे दो। मेरी मां तीन दिन से भूखी है। लेकिन खान

भाई, मेरी पुकार बादलो की गरज मे दब गई और मेरी मा···भूख से मर गई। हा-हा, हवलदार साहब, मैंने चोरी की है। मुझे सलाखो मे बन्द कर दो। पर भगवान के लिए मुझे एक टुकड़ा रोटी का दे दो।

(परदा गिरता है।

तीसरा दृश्य

लखी और यूसुफ लच्छू को पीट रहे हैं लच्छू मार खाकर रो रहा है।

लच्छू : मैं सौ बार कह चुका हूं, यह काम मेरा नहीं। चाहे आप मुझे जिन्दा ही क्यों न गाड़ दें। मैंने यह धन्ध छोड़ दिया है।

लखी : (मारकर) सच-सच बता माल कहां है ?

लच्छू : कौन-सा माल ?

यूसुफ : अच्छा वेटा। हमारी विल्ली और हमें ही म्याऊं

लखी : उस्ताद मुझे लगता है यह लौंडा, हमें जुल दे रहा है।

यूसुफ : मुझे ऐसों का इलाज आता है लखी।

लच्छू : जव मैंने यह धन्धा छोड़ दिया है तो किस वात का पैसा दूं ?

लखी : धन्धा छोड़ने का और किस वात का, साले, चीर डालूंगा खड़े-खड़े को।

(रतन का वाहर से आना)

रतन : छोड़ दो इसे (लच्छू से) ऊपर बैठो। अव क्या काम करते हो।

लच्छू · अब और जब में तो बहुत फर्क हो गया है साहब, तब मैं जेब काटता था, अब मैं जेब सीता हू ।

रतन . ऐसा है तो इन्होने तुम्हे क्यो पकड रखा है ।

लच्छू : यह इन्ही से पूछिए साहब । पुरानी दोस्ती थी, जितनी जेब काटता था हवलदार साहब को आधे से ज्यादा देना पडता था, अगर बदकिस्मती से पकडा जाता था तो जूते अकेले खाने पडते थे । जिस दिन से आपने नेक रास्ता दिखाया, पुराना धन्धा छोड दिया, यह समझते हैं कि मैं इनके बाप का कर्जदार हूं ।

रतन (डाटकर) तमीज से बात करो ।

लच्छू · जी बहुत अच्छा ।

रतन : रहते कहा हो ?

लच्छू : दुकान न० ३२० छती हुई गली, नानकू टेलर मास्टर के पास ।

रतन · कौन नानकू ? वही दस नम्बरी बदमाश, जिसकी चौक मे दुकान है ।

लच्छू जी हा, हजूर ! लेकिन नानकू बदमाश नही । उसे बदमाश बनाया गया है । ऐसा आदमी तो ढूढने से भी नही मिलेगा ।

रतन क्या बकते हो ?

लच्छू · बकता नही हू, हजूर । सच कह रहा हू । वकीलो की लम्बी जिरह ने उसे दस नम्बरिया बना दिया है। पुलिस की मार ने उस हिम्मत पैदा कर दी है कि वह

नया

लिए नाजायज धन्धा भी करने लग पड़ा। लेकिन शादी के बाद उसने सब छोड़-छाड़ दिया।

(रामचमेली का आना)

राम : लाख रुपये की एक बात, पहली बार सच बक रहा है माला।

रतन : क्या तुम भी उस दसनम्बरिये नानकू को जानती हो रामचमेली!

राम : अरे नानकू क्या बाबू मैं तो उसके सारे खानदान को जानूं। बाप उसका तेरे जैसा छैल छबीला चाचा उसका रंग-रंगीला, दादा उसका डम-डमीला, बाबा उसका······

रतन : बस- बस! मैं समझ गया, अगर तूं उसकी सिफारिश कर रही है तो मैं विश्वास कर लेता हूं।

राम : क्या विश्वास कर लेते हो बाबू।

रतन : यही कि नानकू अब शराफत से जिन्दगी बसर कर रहा है।

राम : (छः आने सच बाबू) मैंने तो तेरी तरह उसको भी परखा है बाबू! हर बुरे आदमी को नानकू ठीक रास्ते पर लाने की कोशिश करता है मुझसे एक दिन कहने लगा तेरी हालत देखकर मुझे रोना आता है कि कितनी जवानी में तू विधवा हो गई, कोई अच्छा-सा छोरा देखकर घर क्यों नहीं बसा लेती और सच बाबू फूट-फूटकर रोने लगा बेचारा। (आप भी रोती रही)

राम : झूठ क्यों बोलते हो बाबू। सबसे बड़े तो तुम हो। राम कसम, तुम्हारे ऊपर तो मैं किसी को मानती ही नहीं।

रतन : नहीं भाई, मैं तो बहुत ही छोटा आदमी हूं। मुझे तो सरकार ने लोगों की सेवा के लिए भेजा है।

राम : एक और झूठ। सेवा के लिए औरतें होती हैं, आई० जी० मेरे बाप की बड़ी सेवा करती थी।

रतन : तूं भी किसी की सेवा किया कर ताकि तुझे मेवा मिले।

राम : मेवा तो कब को मिल गया होता अगर वह जेल में सड़कर मर न गया होता। अब तक तीन बच्चों की मां होती।

रतन : अब भी तुझ में क्या कमी है?

राम : हां, यह बात तो होटल वाला खान भी कहता है। हाय दय्या! मैं तो भूल ही गई। मुझे तो उसके पास बोतल लेने जाना है, तेरे साथ बातें करती हूं तो सब भूल जाती हूं। अच्छा। चल बे लच्छू (लच्छू को साथ ले जाती है।)

रतन : कितनी भोली है यह लड़की।

लक्खी : भोली नहीं साहब। मिर्च की डली है। सुना है आपसे क्या कह रही थी।

रतन : शराब की बात कही थी बेचारी, मजबूर होकर यह काम करती है।

लक्खी : मजबूर नहीं है हजूर। लत की बात है, कैसी

मीठी बाते करके लच्छू को छुडा ले गई।

रतन : तुम समझते हो कि वह चलाकी से उसे छुडाकर ले गई है। लच्छू पर मेरी पूरी-पूरी नजर है। मुझे उसका पहले ही पता था कि वह कहा रहता है और वह क्या करता है।

यूसुफ : मुझे तो लगता है कि रामचमेली भी उससे मिली हुई है।

लक्खी : नौ सौ चूहे खाकर बिल्ली हज को चली। हर रोज दिलावर खान के होटल से शराब लाती है।

यूसुफ : आप ही बतलाए साहब ! कोई शरीफ आदमी उसके होटल मे पाव भी रख सकता है।

(खान का प्रवेश)

खान : इसका मतलब तो यह हुआ कि तुम सब जो हमारा होटल मे रोजाना आता है इसान नही शैतान है। दूसरे पर इलजाम लगाने से पहले सन्तरी बादशाह अपनी बगल मे झाको। रामचमेली रोजाना हमारा होटल मे आता है। खुदा जानता है ऐसा पारसा लडकी हमने जिन्दगी में नही देखा। रहा शराफत की बात, दुनिया जानता है कि पुलिस का आदमी कितना शरीफ होता है।

रतन : होश से बात करो खान !

खान : इस्लामो लेकम कोतवाल साहब ! सिंग हाल दें। सोचे कैसा मिजाज है।

रतन : खांन, मुझे कई दिनों से तुम्हारा ही इंतजार था। शुक्र है कि तुम खुद ही चले आए।

खान : खुद नहीं आया है कोतवाल साहब खोचे हम को तो राम चमेली ने रास्ते में बतलाया कि आप इधर तशरीफ रखता है हम दीदार को आ गया है।

रतन . खान ! जब सब होटलवालों ने अपने होटलों में बुरे धन्धे बन्द कर दिए हैं तो तुमने क्यों नहीं किये ?

खान : जो बुरे धन्धे करता होगा। उसने बन्द किए होंगे। न मैं खराब धन्धा करता हूं न मैं बन्द करूंगा।

रतन : बन्द तो तुम्हारे फरिश्तों को भी करने पड़ेंगे। मैं जानता हूं कि तुम्हारे होटल में क्या-क्या होता है।

खान : क्या होता है कोतलाल साहब !

रतन : जुआ चलता है, शराब चलती है, बदकारी के तमाम काम होते है। मेरे पास एक-एक मिनट की रिपोर्ट है तुम्हारी, समझे।

खान : खोचे आहिस्ता बोलो। कोतवाल साहब ! हम किसी के घर से नही खाता है। यह सच है कि हमारे होटल में जुआ चलता है। शराब भी चलता है। खुदा जानता है और कुछ नहीं होता है।

रतन : क्या तुम्हें पता नहीं कि जुआ खेलना या खिलाना,

होटल मे शराब पीना-पिलाना कानूनी जुर्म है।

खान खोंचे कानून की हिफाजत करने वाला अगर कानून को तोडे तो इसमे हमारा क्या कसूर है। मैं मानता हू कि जो मैं करता हू वह कानून की निगाह मे जुर्म है। लेकिन जो तुम्हारा स्टाफ का आदमी करता है क्या वह जुर्म नही है ?

रतन · क्या मतलब ?

खान मतलब साफ है बाबू! तुम्हारा नीचे कितने आदमी काम करता है ?

रतन यही २० या २२ के करीब होगे।

खान बाबू तुम्हारा एक-एक सिपाही रोजाना दो-दो मुर्गा हडप कर जाता है। हर तीसरे दिन दस-दस मुर्गो का गोश्त तुम्हारे सुपरिडन्ट के घर को जाता है। कभी एक्साइज इस्पेक्टर का साला आ रहा है तो कभी फूड इस्पेक्टर का। हलाल का सारा कमाई तो यह लोग खा जाता है। तुम ही बताओ साहब किस तरह से चलेगा यह होटल।

रतन तुम्हारा होटल चलेगा और जरूर चलेगा, लेकिन शराफत से। रही मेरे स्टाफ की बात, आज के बाद अगर मेरा कोई भी आदमी तुम्हारे होटल से एक नये पैसे की भी चीज ले जाए तो बिल मेरे नाम भेजकर पैसा मगवा लेना। उसके बाद देख लूगा फूड और एक्साइज इस्पेक्टर को भी। लेकिन याद रहे, कल से तुम्हारे होटल मे

यह सारे धन्धे बन्द।

खान : कल से क्यों, आज ही से लो ना बल्कि अभी से। हिन्दुस्तान को आजाद हुए ४० और २ बयालीस साल हो गया है लेकिन आज पहली बार पुलिस का ऐसा आदमी देखा है। खुदा तुम को हयायती दे।

रतन : मेरा खयाल है तुम अपने वायदे पर मज़बूत रहोगे।

खान : क्या बात है कोतवाल बाबू! हम पठान है। एक बार कोल करके पीछे हटने वाला दीन का गद्दार होता है। आप से दोस्ती का हाथ मिलाया है, जहां दोस्त का पसीना गिरेगा खान अपना जान न्यौछावर कर देगा। अच्छा चलता है उधर वह छोटा बुलबुल रामचमेली हमारा इन्तज़ार में बैठा होगा। खुदा हाफिज़। (चला जाता है।)

रतन : जै हिन्द।

रतन . लक्खी सिंह!

लक्खी : जी हजूर।

रतन : रामपुर वाली डकैती के केस में डाकुओं के सरदार हीरे के साथ जो टोपीवाला बात कर रहा था क्या तुम उसे जानते हो।

लक्खी : उसे कौन नहीं जानता है साहब! वह हैं सेठ रामदयाल। बड़े-बड़े नेताओं का चमचा। जहां देखी तवा परात वहीं बिताई सारी रात।

रतन : मुझे लगता है कि डकैती के केस में उसका गहरा

हाथ है।

लक्खी : उसका हाथ तो हर छोटे-मोटे केस में रहता है चाहे वह डाकू हो और चाहे जेबकतर।

यूसुफ . जिस पार्टी की हुकूमत हो उसके कपड़े पहने थाने में चला आता है। रोब झाड़ने कि मैं नेता हूं।

लक्खी : और बहुत से कोतवाल तो उसके चक्कर से घबरा जाते हैं हुजूर !

रतन : फिकर न करो। मैं उनमें से नही जो इन नेताओ की बातो मे आ जाऊ।

लक्खी : कई कोतवालो का तबादला तो इन नेता लोगों ने ही करवा दिया है साहब—

(दीपक का प्रवेश)

दीपक : यह ठीक कह रहे हैं रतन

रतन : हैलो दीपक आओ-आओ।

दीपक : इनकी बात सोलह आने सच है।

रतन : इसमें कसूर हमारा नही बल्कि यहा की जनता का है। जनता के सहयोग के बिना थाना चल नही सकता। मै अच्छी तरह से जानता हू लेकिन इसका यह मतलब नही कि लोग खामख्वाह हमारे काम में दखलंदाजी करें। कम से कम मैं तो यह बरदाश्त नही करूंगा। इस थाने का चार्ज लेने से पहले ही मैंने एस० पी० साहब से कह दिया था कि मैं अपने काम में किसी की दखलदाजी बरदाश्त नही करूंगा।

लक्खी : लाख रुपये की एक वात कही है साहव जी।

(यूसुफ अन्दर जाता है)

रतन : यह क्या लाये हो दीपक !

दीपक : तुम्हारी भाभी का नेकलस। उस दिन डाकुओं के सरदार हीरे ने केस में वरी होने की खुशी में फीस के अलावा सौ-सौ के तीस नोट मेरी जेव में डाल दिए। मैंने सोचा क्यों न इस वार तुम्हारी भाभी को ही खुश कर डालूं। उसी वक्त रास्ते में ही रामू सुनार को नेकलेस का आर्डर दे दिया।

रतन : दीपक, कभी तुमने यह भी सोचा है कि रामपुर गांव की डकैती के केस में कितने दिन और कितनी रातें रोने और चीखने की आवाजें दिल को दहलाती रही हैं। कितने वच्चे लावारिस हो गये हैं, जिनका अव कोई सहारा नहीं। काश कि तुमने उस लड़की का हाल देखा होता जिसका गौना होने से पहले ही उसकी सुहाग की चूड़ियां तोड़ दी गई थीं।

दीपक : अगर मैं इन सव वातों की ओर ध्यान दूं तो चला ली मैंने वकालत। प्यारे अपना तो धन्धा तो सच को झूठ और झूठ को सच बनाना है हमारे पास तो जो भी फंसेगा। हम उसको लड़की नही लड़का ही देंगे। वैसे लैक्चरवाजी में तेरा भी जवाव नहीं। हम तो कॉलिज की डिवेट में हमेशा तेरे से मात खा जाया करते थे।

आजकल तुम्हारी राधा कहां है ?

रतन : कौन राधा !

दीपक : जिसके साथ तुम होली के दिनों में कृष्ण बना करते थे। जिसके गाल पर मोटा-सा तिल था।

रतन : ओ···वीना ! शायद आजकल वह हांगकांग में है। सुना है उसकी छोटी बहन ने आई० पी० एस० का इम्तहान पास किया है और किसी बिजनसमैन से शादी की है उसने।

दीपक : और नहीं तो क्या तेरे जैसे टटपूंजिये के साथ शादी करती, जो न खुद खाता है और न दूसरों को खाने देता है। एक और एक ग्यारह हो जाओगे।

रतन : अबे, कहां वह आई० पी० एस० आफीसर और कहां मैं एक छोटा-सा कोतवाल। मुझे तो लगता है अपने हाथ में शादी की लकीर ही नही है।

दीपक : अगर यह बात है तो आज ही सेठ रामदयाल से कहकर तेरी शादी की बात पक्की करवाता हूं। कई दिनों से मेरे पीछे पड़े हैं कि लड़की का रिश्ता करवाओ। एक दिन मैंने तेरे बारे में कह दिया कि तू मेरा लंगोटिया है।

रतन : लंगोटिया मैं नहीं, लगोटिया तो तेरा वही सेठ रामदयाल है रामपुर की डकैती का केस भी उसी ने तुझे दिलवाया था ना, क्या हंस-हंसकर हीरे से बातें कर रहा था जैसे उसके बाप का साला हो।

(रामचमेली का प्रवेश)

राम : लाख रुपये की एक कही। कोयले की दलाली में मुंह काला।

दीपक : किसका छमक छल्लो।

राम : तेरा और तेरे दलाल, उस सेठ रामदयाल का। वावू यह लोग सिर्फ डाकुओं की दलाली ही नहीं करते। दूसरों की लौंडियों के पीछे भी घूमते हैं।

रतन : अच्छा यह वात है। यह कर्म भी करते हैं यह।

राम : अगर इसकी बीवी को पता चल जाय तो एक वाल न रहे वच्चू की टांड पर।

दीपक : अच्छा रतन सोच लेना। अगर शादी का विचार वने तो मुझे टेलिफोन कर लेना। जैसा माल चाहोगे वैसा मिल जाएगा।

(दीपक जाने लगता है)

राम : अरे ठहर-ठहर। किस माल की वात कर रहा है वच्चू! अगर तुझे एक दिन हथकड़ी न लगी तो मुझे रामचमेली न कहना। घसीटी घस्यारन कहना, घसीटी घस्यारन।

दीपक : हथकड़ी की वात तो ऐसे कर रही है जैसे तू ही कोतवाल लगी हुई हो।

राम : अरे, कोतवाल न सही, तेरी तरह भीखमंगी थोड़ी ही हूं। मेहनत की कमाती हूं मेहनत की, तेरी तरह हाथ नहीं फैलाती चोरों और डाकुओं के सामने।

दीपक : जो मेहनत की कमाती है सारे शहरवाले

जानते हैं।

राम वाह, मुए अभी तो तीन दिन भी नही हुए अभी से भूल गया। बाबू, दस चक्कर इसने लगाए हैं। खान के होटल मे एक बोतल शराब के लिए। मुझे बैठे देखकर कहने लगा—हिलो रामचमेली, बडी मुसीबत मे हू, रामचमेली बहन! बस एक बोतल का इन्तजाम कर दो। घर मे कुछ खास मेहमान बैठे हैं। मैंने जवाब दिया इस वक्त तो मेरे पास बोतल नही है। ठर्रा है। बोला ठर्रा ही सही, मैं सोचने लगी इतना बडा वकील होकर मेहमानो को ठर्रा पिलाएगा। इसका साथी सेठ रामदयाल बोला, बहन कोई बात नही हम ठर्रे को अग्रेजी बोतल मे डाल लेंगे। अरे हम आदमी को बदल देते हैं यह तो ठर्रा है।

रतन दीपक, मुझे तुम से ऐसी उम्मीद नही थी कि ऐसे काम भी तुम करोगे। तुम सोचते क्यो नही कि हमारा देश किन-किन कठिनाइयो से गुजर रहा है। एक तरफ बडी-बडी ताकतें अजगरो की तरह इसको निगलने की कोशिश कर रही हैं, दूसरी ओर पडोसी दुश्मन चीलो की तरह हमारी सरहदो पर मडरा रहे है। देश के अन्दर पूजीपति और सरमायादार ब्लैक मार्केटिंग और होर्डिंग कर रहे हैं। चोरो और डाकुओ को पनाह तुम जैसे लोगो से मिल जाती है, जो

एक नासूर के फोड़े की तरह हमारे देश में पनप रही है।

राम : अरे बाबू, किस को सुना रहे हो। कुत्ते की दुम तो शायद सीधी हो जाए पर यह सीधे होनेवाले नहीं।

दीपक : लगता है रतन, तू ज्यादा देर इस थाने में नहीं टिकेगा।

रतन : इसकी मुझे कोई परवाह नहीं है, दीपक!

दीपक : मुंह में खून लगने की देर है तब बतलाना बच्चू, परवाह है कि नहीं, अच्छा। बाए-बाए।

(तेज़ी से जाता है हजारा से टक्कर)

हजारा : फिटे मुंह जमन वाली दे (परात एक तरफ रखकर दीपक को पकड़ता है) चोर दया पुतरा दंडी वड के नस्स गया सें। साडा नां वी हजारा सिंह ए, आ गया ना काबू। ला दयो जी सानू तीन फितियां।

यूसुफ : अबे यह तो अपने वकील साहब है दीपक बाबू!

हजारा : (छोड़कर) माफ करयो साहब जी! साडी पढ़न वाली ऐनक जरा घर रह गई ऐ। गलती दा गोता खा गया हां। बिना ऐनकों त्वाडे थोबड़े ते जेब कतरे दे थोबड़े विच कोई फरक नहीं जे जापदा। अपनी टिंड जरा चंगे जए नाई तो मुढवाया करो।

रतन : हजारा सिंह।

हजारा : (सलूट देते हुए) जै हिन्द साहब जी, माफ करना

जनाव जी। खुशी दे मारे ऐनक घर ही भूल आया जे।

रतन खुशी किस वात की।

हजारा वारह वरया मगरो पहली वार साडे पैर भारी हुए जे। ओये फिटे मुह साडा मेरा मतलव ए दरशनो दे पैर।

रतन दर्शनो ?

हजारा *आहो जी साडी वोटी, वडी चन्गी जे साहब जी,* वारह माला मगरो पोडी चढी जे। नडे नई लगन देंदी सी। असा वी वोले सो निहाल कर दित्ता। सारे मोहल्ले विच हलवा वड के आया जे त्वाडे लई वी ले क आया हा। (सबको देता है।)

राम वाह सरदार जी वाह सब को तो हलवा खिला रहे हो और हमे छोड दिया।

हजारा तुसी वी लो बादशाहो, तुहाडे लई ते जान वी हाजिर है।

राम जान तो अपनी घर वाली को ही देना हमे तो तो हलवा खिलवाओ।

हजारा क्यो जी कुज स्वाद आया जे, रब दी सोह खालिस देसी घय्यो दा जे। दर्शाओ ने अपने हथा नालो वनाया जे।

राम दर्शाओ क्या आपकी नौकरानी है सरदार जी।

हजारा फिट्टे मुह जमन वाली दे। शुक्र करो सामने नही। नही ते रव दी सोह मेरी दाडी दे वाला

दा जो हाल हौंदा सो होदा ई पर त्वाडी गुत्त दा इक वी वाल नजर नहीं आंणा सी, वड़ी डाडी जे डाडी।

राम : अच्छा क्या तुम से भी ज्यादा ताकतवर है।

हजारा : ऐ वी कोई पूछन दी गल ए। व्याह मगरो ते कई साल सानूं लट्टू वांग नचादीं रही जे। साडी वेवे साडे भाईए नूं वड़ा डरांदी सी। पर ऐनू वेल के ओदा वी सिगनल डाऊन हो जान्दा सी।

राम : जब उसका इतना रोब है तो उसको पुलिस में क्यों नहीं भरती करवा दिया।

हजारा : असी ते नां दे ई हवलदार हां वादशाहो। असली हवलदारन ते ओ ही ऐ! मजाल ए किस्से दी मुहल्ले विच नां वी ले जाए। सारे हवलदारन ही कह दें ने। कदे-कदे साडा डंडा साडे ते ही चला जांदी जे।

रतन : हजारा सिंह।

हजारा : जी जनाब।

रतन : हलवे के ऊपर चाय का भी इन्तजाम होना चाहिए।

हजारा : हुणे लो जनाव। खान दा होटल किस काम आयेगा (जाने लगता है। हजारा के साथ यूसुफ भी बाहर जाता है।)

रतन : विल साथ ले आना (राम चमेली
मेरी तो राय यह है कि अच्छा-सा

कर शादी कर लो और अपना घर बसाओ।

राम : कौन करेगा मुझ अनपढ से शादी ?

रतन : हीरा अपनी कद्र खुद नही जानता, मुह पर कहना अच्छा नही लगता। पर जो गुण तुझ मे है वह अच्छे-अच्छे पढे-लिखो मे भी नही होते हैं।

राम : अगर ऐसा है तो तू ही कर ले न शादी मुझसे, और भर दे मेरी माग अपने हाथ से।

रतन · क्या तुम मेरे साथ शादी करना पसन्द करोगी ?

राम : अरे बाबू राम कसम, मैं तो तेरे पर जान दे दूँ, तू शादी की बात कर रहा है।

रतन · सच्च ! तुम मेरे साथ शादी करना पसन्द करोगी ?

राम : यह भी कोई पूछने की बात है बाबू ?

लक्खी · हा-हा, इससे अच्छा मौका और तुझे कौन-सा मिलेगा। आप भी कमाल के आदमी हैं साहब, ना जाई ना जाता अल्ला मिया से नाता। भगवान जाने कहा-कहा रहती है, क्या-क्या करती है, किन-किन से वास्ता है (रामचमेली से) माफ कर, तुझे और कोई नही मिला जो यही डोरे डाल रही है।

रतन लक्खी सिह !

लक्खी · जनाब जरा तो आप सोचें, पहले दिन आप से शराब की भट्ठी की बात कर रही थी, उस दिन जुआरियो के साथ जुआ खेल रही थी,

जेब कतरों से इसका वास्ता है, चोरों और डाकुओं के नाम इसे इस तरह याद हैं कि जैसे इसके फुफेरे, मौसेरे भाई हों। और ना जाने क्या-क्या करती है ।

राम : वाह रे बाबू के खैर-खाह, अगर तेरी पोल खोल दूं तो बच्चू को भागने का रास्ता नहीं मिलेगा। यहां थाने में बैठा बड़ी वफादारी दिखा रहा है डाकुओं का भाई। रामपुर की डकैती के केस में जो तीन डाकू मारे गए थ, मोटी मूंछों वाला गंगा इसी मुए लक्खी सिंह का सगा भाई था।

रतन : क्यों लक्खी सिंह, क्या यह सच है।

लक्खी : जी साहब ! पर जो बात हमारे सगे रिश्तेदार नहीं जाने, इसे कैसे मालूम है ?

राम : जोतसन हूं जोतसन ! कितनी जमीन खरीदकर दी थी उसने तेरे बाप को लुटे हुए माल की ? बोल कितने एकड़ ? (रतन से) बाबू, तू कहे तो मैं तेरे एक-एक आदमी को बता दूं कि कहां से क्या-क्या खाता है ?

रतन : अच्छा !

राम : पर अब काफी सुधर गए है।

रतन : कैसे ?

राम : जैसे एक मछली [illegible] तालाब को गन्दा [illegible] वैसे ही तेरे [illegible] अपने साथियों सुधार देता [illegible] 'कबीरा [illegible] साधु की [illegible] कुछ

नहीं फिर भी वास मो वास।

रतन वाह राम चमेली, वाह, तुम तो पूरी भक्तन हो, अगर वाकिए ही तू मुझसे शादी कर ले तो मेरा जीवन सफल हो जाए।

राम तो वावू कर ले न सफल अपना जीवन और भर दे एक वार फिर मेरी माग।

रतन तो चल वावा वालकनाथ के मदिर, मूर्ति के सामने तुझे हार डालता हू। लरखी सिंह एक तागा जल्दी ले आओ।

राम पर वावू मेरी शर्ते है। वावू शादी के बाद मुझे मारोगे तो नही ? मेरा पहला खसम शराब पीकर मुझे कभी-कभी वहुत पीटता था।

रतन फिकर न कर, मैं तो शराव को हाथ भी नही लगाता पीना तो दूर की बात।

हजारा साडे साहव ते सिर्फ चाय पीदे ने।

राम क्यो झूठ बोल रहे हो वावू, कोई सुनेगा तो क्या कहेगा। ऐसा तो पुलिस वाला हो ही नही सकता जो शराव न पिए। अपने पैसो की भले ही न पिए पर दूसरो का माल जरूर पी जाएगा।

रतन सब को एक रस्सी से नही वाधना चाहिए। अब कोई अग्रेजो का जमाना थोडे ही है। नये-नये अफसरो को नये-नये तरीको से ट्रेनिंग दी जा रही है, पुरानी बुराइयो को धीरे-धीरे दूर किया जा रहा है। चोरो, डाकुओ, जेब कतरो और स्मगलरो को पकडने के नये-नये तरीके अपनाये

जा रहे हैं।

राम : बाबू, यह मगलर क्या होते है ?

रतन : मगलर नहीं, स्मगलर। स्मगलर नहीं जानती। यह सबसे बड़े देशद्रोही होते हैं। या यूं समझ लो चोरों, डाकुओं और जेबकतरों के बाप।

राम : यह बात है तो राम कसम शादी होने दे अगर मैंने तुझे मगलर न पकड़ दिए तो रामचमेली न कहना। घसीटी घस्यारन कहना, घसीटी घस्यारन।

(टांगे की आवाज)

रतन : लो टांगा आ गया।

लखी : आप चलिए साहब, मैं हार लेकर आ रहा हूं।

राम : (चलते-चलते) खाली हार लेकर ना आ जाना, कुछ मिठाई भी ले आना।

रतन : मेरी रवानगी लिख लेना।

(जाते है)

लखी : (बाहर झांककर) उस्ताद गए।

यूसुफ : मुझे लगता है अब पुलिस के बुरे दिन आ गए हैं। जब कोतवाल ही ऐसी-ऐसी लड़कियों से शादी करने लग पड़े तो आम जनता का क्या होगा।

हजारा : फिट्टे मुंह जमन वाली दे। जनता पवेगी डट्ठे खू विच, रब जानदा जे यूसुफ साहब, पुराना जमाना-जमाना सी, अज दे जमाने नूं ते अग लग चली जे। साडे साहब जी दी ते मत ही मारी गई

ए, एह रामचमेली वी कोई जनानी ऐ। जिस दे नाल फेरे लेवन लगे ने। जनानी ते दर्शनो ऐ। रब दी मोह सारा मुहल्ला डरदा जे। ब्याह के नयाए सा ते लोकी कहन्दे सन वोटी नही झोटी ए झोटी। पीले कपडे पाके ऐंज जापदी-सी जीवें सरसो दे खेत विच मज खलोती ए।

लक्खी तभी तो तुम्हारा डडा तुम पर चलाती है।

हजारा चलादी ऐ ते चलावे पई। एह वी साडे लई कोई नवी गल ऐ। एह ते डडा चलादी ऐ, साडी बेबे ते साडे भाईए ते डमडिया ते सोटे चला जादी सी। मजाल ऐ साडे भाईए दी, चू वी कर जाए। रब जान्दा जे असी ते भाईए दा ना रोशन कर रहे हा। दर्शनो अगे असी कदे नही जे बोले, साडे लई बडया दा अखान ऐ 'प्यो ते पुतर, तुखम ते घोडा, बोता नही पर थोडा-थोडा।

(टेलीफोन आता है)

लक्खी जै हिन्द ! थाना कूचा घासीराम से ड्यूटी कास्टेबल लक्खी सिंह बोल रहा हू जनाबे आली।

जी हा कूचा घासीराम थाने से बोल रहा हू।

कोतवाल साहब, कोतवाल साहब शादी करने गए हैं।

जनाब ! जी हा, शादी।

अपनी शादी और किसकी शादी। कौन साहब बोल रहे हैं जी, ओ वकील साहब! राम-राम जी। मैं लक्खी बोल रहा हूं हुजूर!

जी।

जी नहीं। साहब ने छुट्टी नहीं ली। यहीं पास के बाबा बालकनाथ के मन्दिर में।

नही जी उन्होंने तो किसी को भी नहीं बुलाया।

जी।

उसी पूरबन के साथ।

वही रामचमेली।

यह तो आप जाने साहब। हम कौन होते हैं बीच में बोलने वाले।

जरूर जी आते ही आप को मुबारकबाद दे दूंगा।

(खान का आना)

खान : इस्लामोलेकम हवलदार साहब!

यूसुफ : वालेकम इस्लाम। कहिए कैसा चल रहा है आपका होटल।

खान : खोने खुदा का फजल है, दो वक्त की रोटी नसीब हो जाता है। किधर है आपका कोतवाल साहब!

यूसुफ : अभी-अभी शादी करवाने गए हैं।

खान : किसका शादी?

लक्खी : अपनी शादी और किसकी शादी।

खान कब हुआ ?

हजारा हुआ नही है, हो रही है रामचमेली के साथ।

खान ओ रामचमेली के साथ। उस छोटा बुलबुल के साथ, ओ खुदा खैर वखोरे वारात। खोचे कही मजाक तो नही कर रहा है सन्तरी बादशाहो।

हजारा ओये पठाना। तू कोई कुडी ऐ जेहडा तेरे नाल मजाक करना ऐ। वाय गुरु जानदा ऐ असा ते वदे दर्शनो नाल मजाक नही कीता जिरथे साडा हक ऐ। ते तेरे नाल की करना ऐं। मुद्दता ही हो गईया ने खान त्वाडा तदूरी मुर्गा चखया।

खान खोचे यह भी कोई बडा बात है, अभी भेजता हू दो बढिया तन्दूरी मुर्गे एक तुम्हारे लिए और एक तुम्हारी बीवीजान के लिए। निकालो जल्दी तीस रुपये।

हजारा लगिया ने न टकसाला जल्दी निकालो तीस रुपये, ३० रुपये दे के तेरे कोलो ही खाना ए। काके ते भापे दे हाटल बन्द ते नही हो गए।

खान खोचे मुफ्त तो हम अपने बाप को भी नही खिलायेगा सन्तरी बादशाह।

हजारा सानू पता लग गया ए। फैर दित्ता ना कोतवाल साहब ने तेरी पीठ ते वी हाथ। लगे ने कृपश्ना मिटान। साडा भाईया आई० जी० साहब दा खास अरदली सी, ओ ते कृपश्न मिटा नही सकया ते एह कल दा छोकरा मिटायेगा कृपश्न रामचमेली नाल ब्याह करके।

खान : खुदा जानता है खोचे। उस बे-मां-बाप की लड़की से शादी करके बहुत स्वाब का काम किया है कोतवाल साहब ने ।

हज़ारा : आ···हो साहब ने दो ई स्वाब दे कम कीते ने। एक रामचमेली नाल व्याह करके दूजा साडे ढिढा ते लत मार के।

खान : वो कैसे ?

हजारा : वह कैसे ते इस तरह कह दित्ता ई जीवे तेनूं कुज पता ही नहीं । ओये फ़ुमना सच दसीं कदे पुलिस वालयां तों पैसे मंगन दी हिम्मत पैंदी सी। हुण केनी अकड़ के कहना एं, कडो जी ३० रुपये। ३० रुपये जे पुलिस वाले कडन लगे ते कर लैय्या उन्हां अफसरियां।

लक्खी : ठीक ही कह रहे हो हजारा सिंह। पुलिस वालों की अफसरिया निराले ढंग की है, लोग तो घरों में बाल-बच्चों के साथ दीवाली मना रहे होते हैं और हम सड़कों पर धक्के खा रहे होते हैं।

यूसुफ : लोग जब ईद के दिन सेवियां खा रहे होते है, तो हम सड़कों पर झक मार रहे होते हैं।

हजारा : सच पूछो तो मां प्यो मोया महकमा जे, न कोई वली न कोई वारिस। दूजे सरकारी नौकरां नू, किन्यां सहूलतां मिल जांदिया नें। तुसी दसो पुलिस वाले सरकारी नौकर नहीं।

यूसुफ : पहली वार अकल की बात की है तूने हजारा सिंह।

हजारा - असी ते हमेशा अकल दी गल करदे आ यूसुफ साहब। पर साडी कोई सुने वी ता। तुस्सी दसो जे पुलिस वालेया नूं चगी तनख्वाहा मिल जान ते क्यो चटन ओ दूजया दिया लेला। ते क्यो लवन ओ रिश्वता।

लक्खी बात तो पते की कह रहा है उस्ताद। किसी से दो पैसे खाकर १० रुपये का काम करना पडता है, फिर बदनामी वह अलग।

हजारा . इक गल होर वी जे, हराम दा पैसा कदे नही जे फनदा। घर विच कदे कोई बीमार ते कदे कोई! बारह वरे हो गये जे ब्याह नू, रब दी सोह कोई हकीम ते डाक्टर नही जे छडया। कदे मैंनूं टस्ट कर रहे सन ते क्दे दर्शना नूं। साडा रोग उन्हा दी समझ तो बाहर सी। रिश्वत छोडी झट दर्शनो ओनी चढे पोढी। वाहे गुरु दी कृपा होई ते हजारा सिह दा पुत्र लखासिह फीनिया दी था फुल ला के ही आयेगा। ते तुसी सारे मारोगे सलूटा ओनू।

(इतने मे रतन का यूसुफ के साथ आना लड्डुओ का डिब्बा साथ म)

सब बहुत-बहुत मुबारक हो साहब, बहुत-बहुत मुबारक।

रतन आपको भी। यूसुफ, सबको लड्डू खिलाओ भाई।

हजारा . खाली लड्डुओ नाल ही कम नही चलना साहब जी। एह ते सारे झड्डू ने किसे ने वोलना नही।

अगी बोलांगे ते तुसी कहोगे कि बोलदा ए।
कोड़े घुट बिना व्याह दा की स्वाद ?

खान : तुम घुंट की बात करता है अगर तुम चाहे तो हम तुम्हें शराब में नहला देगा संतरी बादशाह आज हमारा बेटी बुलबुल का बारात हुआ है। जितना हम आज खुश हुआ है इतना सारी हयाती में खुश नहीं हुआ। इसी खुशी पर जुमारात मनाया जायेगा। परसों तुम सबका खाना हमारा होटल में होगा।

रतन : नहीं खान। तुम तो जानते हो मैं इन सब बातों के खिलाफ हूं।

खान . तुम खिलाफ होने से क्या होता है, तुमने हमारे साथ दोस्ती का हाथ मिलाया। मिलाया या नही, बोलो ?

रतन : हां, मिलाया है।

खान : खोचे हमारा सूबा सरहद में हाथ मिलाने वाला भाई का माफिक माना जाता है। तुमने हमसे हाथ मिलाया, हम तुम्हारा बड़ा भाई। बोलो है कि नही ?

रतन : हां, है लेकिन खान !

खान : लेकिन वेकिन कुछ नहीं। क्या बड़ा भाई छोटा भाई की शादी पर खुशी नहीं मना सकता ?

हजारा : मना क्यों नही सकदा खाना। साडे व्याह ते साडे भाइयें ने ओ खुशियां मनाइयां ते ओ भंगड़े पाये सारे पिंड विच धुमा पै गइयां सन।

खान लेकिन वह छोटा बुलबुल रामचमेली किधर है ?

रतन वह अपने घर गई है, शायद थोडी देर मे आ जायेगी।

खान कोतवाल साहब ! जितना हम आज खुश है, इतना खुशी सारी हयाती मे नही हुआ। लगता है हम अपना वतन काबुल मे अपनी बेटी बुलबुल का बारात करता है। वह हसता है तो हमारा दिल हसता है, हमारा दिल नाचता है वह खुश होता है तो ऐसा लगता है हम उसको गोद मे बिठाकर अपने हाथ से चिलगोजा, बादाम, किसमिस खिलाता है। वह रोता है तो हमारा दिल रोता है, लगता है हम सब कुछ खो चुका है। कोतवाल बाबू अगर इजाजत हो तो थोडी देर इधर बैठ सकता हू। एक बार छोटा बुलबुल को दुल्हन के लिबास मे देखना चाहता हू। (रो पडता है।)

रतन खान, मैं तुम्हारे जज्बात समझ रहा हू। वह दुल्हन का लिबास नही पहनेगी। यह उसकी शर्त थी। वह कहती थी कि मैं जैसे कपडे पहनती हू वैसे ही पहनूंगी। मुझे मजबूर न करना। मैंने उसे मजबूर नही किया।

खान बहुत अच्छा किया तुमने, कोतवाल बाबू, बहुत अच्छा। आहिस्ता-आहिस्ता तुम उसका दिल जीत लोगे, फिर जो तुम कहोगे वही वह

पहनेगी।

हजारा : पहले-पहले दर्शनों वी वड़ीया दुलतियां मारदी सी। पर आहिस्ता-आहिस्ता असी वी पसमा लई। एह साडी हो हिम्मत जे, जेहड़ा ओहनू कावू रखया होया जे। नहीं ते उत्ते ही चड़ी रहनदी सी।

(रामचमेली भागती हुई आती है और घड़ियों का थैला फेंकती है। पीछे-पीछे दो आदमी भी भागे आते हैं।)

राम : लो वावू सम्भालो। धर्मदास, दयाराम। साले नाम के धर्मदास काम के चण्डाल, देशद्रोही।

धर्मदास : तू तो वड़ी भक्तन है जो हमारी दूकान से घड़ियां उठा लाई है।

राम : लाई नहीं हूं, खरीदी है वह भी नकद पैसों की। मगलर मूए।

धर्मदास : किसको पैसे दिए है, क्यों झूठ वोल रही है ?

राम : तेरे वाप को। साले पैसे लेकर मुकर जाते हैं, कितनी वार फारन का माल मेरे को वेचा है ? कोतवाल साहव ! हर वार कमती। हर वार कमती।

रतन : अच्छा।

राम : हां वावू, दूर क्यों जाते हो पिछले मंगल की वात है, इन्कम टैक्सियों को इसके गोल-माल का पता चल गया। मैं इसकी दूकान पर खड़ी थी, इसने नोटों का भरा हुआ थैला मुझे देना चाहा

मैंने कहा जो नोट तुम्हे मरवा रहे है मुझे कहा बचाएगे। मैने इसके मुह पर थूक दिया।

रतन बहुत अच्छा किया तुमने रामचमेली।

राम ऐसा, फिर प्लीज बाबू, टीच देम ए गुड लैसन।

रतन क्यो नही। हजारा सिह, इनको दूसरे कमरे मे ले जाओ।

हजारा चलयो जी। (अन्दर ल जाता है।

रतन लक्खी सिह, यूसुफ इनके शिकजे खीचो। और तरीको से इनके गिरोह का पता लगाओ, लगता है यहा एक खासा गैग रहता है।

राम फिकर न कर बाबू, मैं सारे सगलरो को पकड-कर तेरे हवाले कर दूगी।

खान कितना बहादुर है छोटा बुलबुल। शादी मुबारक हो बेटी बुलबुल !

राम तुमको भी खान बाबा। चलो, अन्दर चलें। देखो कैसे खीचे जाते हैं शिकजे।

(दोनो अन्दर जाते है।)

रतन लक्खी सिह !

लक्खी जी हजूर !

रतन जरा एस० पी० साहब को टेलीफोन मिलाओ।

लक्खी बहुत अच्छा हजूर।

(टेलीफोन मिलाता है।)

हैलो, एस० पी० आफिस से बोल रहे हैं, जै हिन्द, मैं कूचा घासीराम से बोल रहा हू। एस० एच० ओ० साहब एस० पी० साहब से

बात करेंगे भईया।
अच्छा अभी दे रहा हूं।
एस० पी० साहब लाईन पर आ रहे हैं।

रतन : (टेलीफोन लेकर) जै हिंद जनाब, बिल्कुल मजे में हूं साहब।
जी हां, जी हां।
तफ्तीश हो रही है।
बहुत अच्छा हुजूर।
राईट सर।
राईट सर।
कौन साहब।
जी हां, समझ गया।
जैसा आप मुनासिब समझें।
जै हिन्द साहब।

रतन : एस० पी० साहब आई० जी० के पास जा रहे हैं वहां से सीधे यहां आयेंगे।

लक्खी : मन्दिर में जाने से पहले रामचमेली ने आप से कहा था, वह आप को स्मगलर पकड़ देगी। उसकी बात सही निकली है।

हजारा : फिट्टे मुंह। एह ते साडे साहब नूं फंसान वास्ते ओन्हें कहया सी।

रतन : मुझे फंसाने के लिये।

हजारा : आहो साहब जी। जनानियां विच १०१ चलितर होंदे जें। साडा भाइयां केहंदा सी कदे जनानी दा इतबार न करो। भावें त्वाडी मां

ही क्यो न होवे।

रतन पुराने जमाने की वात और थी हजारा सिहा, पुराने जमाने मे और नए जमाने मे जमीन-आसमान का फर्क है।

हजारा लख रुपये दी गल नही जे। एज साडा भाईया हमेशा सानूं उल्टी राह ही लादा रहेया जे। साहव जी, अगर वुरा न मनो ते इक गल कहवा।

रतन जरूर-जरूर।

हजारा एह राम चमेली ते साडी दर्शनो दोनो इको रस्सी नाल वनन जोगिया ने। मेरा मतलव जे काला अक्षर भैंस वरावर। क्यो न दोनो नूं चगे जये स्कूल विच दाखिल करवा दईए। कुछ पढ-लिख जान।

रतन भई, यह बात तो मुझे रामचमेली से पूछनी पडेगी। तजवीज तो तुम्हारी ठीक है पर विना उससे पूछे मैं कुछ नही कह सकता।

हजारा साहव जी! जदो दे तुसी ऐथे आये हो, किने केस तुस्सी पकडे पर इक दा वी ईनाम सानूं नही मिलया। हुन जे ऐस केस दा वी कुछ नही मिलया ते फिर पै गई खोती खू विच।

रतन घवराओ नही हजारा सिह। जब भी तुम कोई वहादुरी का काम करोगे, मै उसी वक्त तुम्हे इनाम दिलाऊंगा।

(एस० पी० साहब का आना)

(हजारा और रतन सलूट देते है।)

एस० पी० : भाई रतन ! हार्टिस्ट कांगरेचुलेशन, तुमने तो कमाल ही कर दिया। आई० जी० साहब बहुत खुश हैं तुम्हारे काम से। जबसे तुमने इस इलाके का चार्ज सम्भाला है करप्शन आधी भी नहीं रही।

रतन : लेकिन सहब इस कुप्रश्न'को मिटाने में मेरा उतना हाथ-नहीं जितना राम चमेली का है।

एस० पी० : राम चमेली।

रतन : जी हां, एक पूरवन लड़की।

हजारा : बड़ी चंगी जे साहब जी। एह ताड़-ताड़ अंग्रेजी बोलदी जे।

रतन : (जोर से) हजारा सिंह !

हजारा : अपने अफसरां कोलों कादा लुक बड़ी बहादुर जे साहब जी। ओहदी बहादुरी बेख के साहब ने ओहदे नाल फेरे लिते ने। हनीमून नहीं जे मनाया।

एस० पी० : क्या मतलब ?

रतन : मैंने उसकी बहादुरी देखकर उससे शादी कर ली है, सर !

एस० पी० : वैरी गुड। बहुत अच्छा किया तुमने, रतन। कभी मौका मिला तो उससे मिलकर खुद मुबारकबाद दूंगा।

हजारा : ऐस तो चंगा मौका फिर कदो आयेगा साहब जी। तुरंत दान महाकल्याण। हुने कराना उन्हां दे दर्शन तुहानू।

रतन : हां-हा, बुला लाओ उस को अन्दर से।

एस० पी० : यह अन्दर क्या कर रही है?

रतन : इन्वैस्टीगेशन देख रही है कि कैसे होती है।

एस० पी० . बहुत खूब! (रामचमेली मटकती हुई आती है।)

रतन : रामचमेली, यह हमारे एस० पी० साहब है।

राम : राम-राम, साहब जी।

एस० पी० : (मुड़कर) राम-राम। अरे, आप! (सलूट देती है।)

रतन : जी हा, रामचमेली।

एस० पी० : रतन, क्या तुम इन्हे नही जानते? यह है मिस रमा—आई० पी० एस० आफिसर जिन्होने चोरों, जेबकतरो और स्मगलरों को पकड़ने का एक अपना ही तरीका अपनाया है।

रतन : मिस रमा, आई० पी० एस० आफिसर!

हजारा : पर ओ ब्याह ते ओह फेरे।

राम : वह सब एक नाटक था।

यूसुफ : नाटक...

रतन · नाटक...

खान : लहोल वला कोवत—क्या वह सब नाटक था!

राम जी हा।

एस० पी० · इस केस का कुछ पता चला, मैडम!

राम सर, लगता है एक अच्छा-खासा गैंग हाथ में आ गया है। उस हिप्पी को मैंने खान के होटल मे पहचान लिया था, जिसने अपना पासपोर्ट इन्ही घड़ियो वाले स्मगलर के पास बेचा था। रतन की को-ऑपरेशन के बिना यह काम बहुत

मुश्किल था। अगर हमारे देश को चन्द ईमानदार और ड्यूटी को निभाने वाले ऐसे कोतवाल मिल जायें तो मैं दावे से कह सकती हूं कि हमारे देश का नक्शा बदल जाये। रतन के काम को देखते हुए आप से रिक्वेस्ट करूंगी कि आई० जी० साहब से सिफारिश करके इनकी तरक्की करवायें।

खान : इजाजत हो तो हम थोड़ा बोल सकता है, एस० पी० साहब !

राम : क्यों नहीं, खान बाबा।

खान : देखो छोटा बुलबुल ! तुम हमारा बुलबुल है। है ना!

राम . क्यों नहीं—जो प्यार पिता का तुमने मुझे दिया है, मैंने हमेशा तुम्हें पिता के रूप में ही माना है।

खान : ऐसा है तो छोटा बुलबुल, अगर एतराज न हो तो हम कोतवाल साहब को इनाम देना चाहता है।

एस० पी० : क्या मतलब ?

खान : तुम इसकी तरक्की के लिए बोल रहा था। हम इसका तरक्की करता है। नाटक को असलियत में बदल दो, छोटा बुलबुल। (रायमेली का हाथ रतन के हाथ में देता है।) इससे अच्छा जीवन-साथी तुम्हें नहीं मिलेगा।

हजारा : फिट्टे मुहूं जनम वाली दे साडी दर्शनों दा जीवन-साथी साडे तों चंगा नहीं मिल सकदा। (सब हंसते हैं।) □